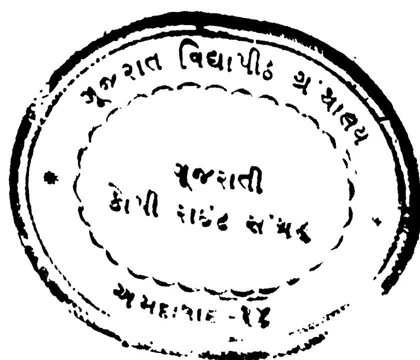

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય
ગુજરાતી
અમદાવાદ-૧૪

श्री वीतरागायनमः

अथ

श्री हरिचंदराजानो रास प्रारंभः

॥ दोहा ॥

॥ पास जिनेसर पाय नमी, थंभण पुर थिरवास ॥ जुग जुग मांहें दीपतो, पूरे वंछित आस ॥ १ ॥ आदि लखे कुण एहनी, वर्ष इग्यारे लक्ष ॥ वरणत पश्चिम देवता, कीधी पूज प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ अंसी सहस वर्ष अचल, सेवा कीधी सार ॥ वासग विष हरता हरि, प्रभु पाताल मझार ॥ ३ ॥ पश्चिम महोदधी पाखती, पूज्यो राजा राम ॥ सात मास नव दिवस प्रति, तेहनां सीधा काम ॥ ४ ॥ नारायण बहु दिन नम्यो, बार वरश करी पत्त ॥ द्वारिका दाह जले वसें, प्रगट्यो सायर दत्त ॥ ५ ॥ कांति नगरी प्रगटीयो, योगी नागार्जुन ॥ सेढी तट सीधो

तिहां, सोवन पुरिस रतन्न ॥ ६ ॥ वेलुं अंतरें जिनवरू, रह्यो विबुध तरु गूढ ॥ तुरत गया तस देहथी, गाली अढारे कोढ ॥ ७ ॥ त्रिभु वन पति तारण तरण, खंभ नयर अहि ठाण ॥ सकल मूरति प्रभु निरखीया, जीवत जन्म प्र माण ॥ ८ ॥ हुं सरणे आव्यो हवे, असरण सरण जिणंद ॥ सानिध्य कारी तुं सदा, मुज कर परमाणंद ॥ ९ ॥ मुज मति छोटी मूढ मति, महोटा गुणसुं मोह ॥ मेरु चढे किम पांगलो, जे अति अधिक सझोह ॥ १० ॥ भक्ति सक्ति मुज उपनी, पंखीने जिम पांख ॥ तिम आवी सेवक तणे, अंधाने जिम आंख ॥ ११ ॥ बोली न जाणे बोबडो, करे तर्कीसुं वाद ॥ आ संगें जिनवर मल्या, तिहां गयो संवाद ॥ १२॥ जन्म सफल तो जाणीयें, कहीयें गुण सत्य वंत ॥ आगें थोडो आलखो, आलस बंध अ नंत ॥ १३ ॥ धंधो पण छूटे नहिं, क्रोध मो हने काम ॥ कर्म सबल दल कारीया, लेण न द्ये

कोइ नाम ॥ १४ ॥ पण में कीधी विविध परें, श्रीजिन पास पुकार ॥ अंग थकी अलगा रह्या, बोलीस अक्षर सार ॥१५॥ धर्म विशेषें छे नला, दान शीयल तप नाव ॥ पण सहुको दाखे सही, सबलो शील प्रनाव ॥१६॥ शील सत्त केडे सहू, दान ज्ञान तप धर्म ॥ हवे हुं तेह वखाणसुं, में जाण्यो ए मर्म ॥१७॥ राजा हरिचंद साहसी.सती सु तारा नारि ॥ शील सत्त तेहना चरित्र, सांजलजो नर नारि ॥ १८ ॥ गांठ गरथ लेखा परखें, प्रगटी हीरा खाण ॥ लाखनली कुण मोलवे, एहवो अवसर जाण ॥ १९ ॥ सुणतां अमीय समान गुण, रंजे चतुर सुजाण ॥ नीजे पण नेदे नहीं, पाणी मांहिं पाषाण ॥ २० ॥ श्री नगवंतजी पूज्यजी, कहो वधे जिम मुज्ज ॥ मूरख नर जाणे नही, हाहा करे अबुज्ज ॥ २१ ॥ मन संदेह म राखजो, फरि पूछजो वात ॥ कह्या विना किम जाणीयें, अंतर कथा अखात ॥ २२ ॥ आलस निद्रा परिहरो, कच पच म

करो कोय ॥ कांजी पाणी ढांमीने, दूध पीयो सहु कोय ॥ २३ ॥ नवरस भेद वखाणसुं, छे मुऊ मन कल्लोल ॥ कनकसुंदर एक चित्तशुं, सरस कथा रंगरोल ॥ २४ ॥ नवरस नामानि ॥श्लोकः॥ शृंगार करुणा शांता,बिभत्स भय मद्भूतं॥हास्य वीररसं रौद्रं, रसैतानि नवान्यपि ॥ २५॥

॥ ढाल ॥ पहेली राग केदारो अैसा सोदा गरकुं चलण न देशुं ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिन त्रिभुवन मंमल माया, मध्य मानव जन भवन वसाया ॥ सो अपरंपर अलख निरंजन, सुर नर नाग जना मन रंजण ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सोअपरंपरं० ॥ आदि पुरष श्री आदि जिणंदा, दीपे ज्योति सरूप दिणंदा ॥ ॥ सो० ॥ मीन तणा पग नीर वहंता, पंखी मारग गगन भमंता ॥ २ ॥ सो० ॥ नाद शब्दकुं वाकी ढाया, अनहद ब्रह्मंम पिंम समाया ॥ सो० ॥ आदिपुरष परमेश्वर अैसा, ज्योति सरूपि दीपे जैसा ॥ ३ सो० ॥ तेहनी कुक्षिनो

पार नकोइ, जंबुद्विप तणो विधि जोइ ॥ सो० ॥
लाख जोयण जंबू परिमाणो, वृत्ताकारे तेह व
खाणो ॥ ४ ॥ सो० ॥ खेत्र जरत तस जीतर
सोहे, पंच सया जोयण मन मोहे ॥ सो० ॥
ठ कलाने जोयण ठवीसें, आगम मांहे कह्यो
जगदीसें ॥ ५ ॥ सो० ॥ देश बत्रीश सहस
नर नारि, जल थल मानव जरत मफारि ॥ सो० ॥
आरज देश साढा पचवीश, धर्म कर्म सेवा
जगदीस ॥ ६ ॥ सो० ॥ अवर देशमां धर्म न
ध्यान, देवन पूजा दान न मान ॥ सो० ॥
साकेत देश अयोध्या चंगी, नव बार जोयण
नवरंगी ॥ ७ ॥ सो० ॥ सहस ब्यासी त्रण सय
पचवीश, गाम एहना कह्या जगदीस ॥ सो० ॥
सोहे देवपुरी अनुमानी, राजा हरिचंदनी राज
धानि ॥ ८ ॥ सो० ॥ नगरतणो विस्तार कहेसुं,
कनक सुंदर कहे सुजस लहेसुं ॥ सो० ॥ ढाल
संपूर्ण कीधी पहेली, कीर्त्ति प्रगटथई जग व
हेली ॥ ए ॥ सो० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग रामग्री ॥ शीताता रूपे रूडी जाणे आंबाफाले सूडी हो ॥ ए देशी ॥

॥ अयोध्या अधिक विराजे, जिण आगल लंका लाजेहो ॥ नगरी नवरंगी ॥ चवडी दीर्घ चतुरंगी, तेहि त्रिकूट त्रिभंगी हो ॥ १ ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ लांबी सेरी विच सेरी, आडी अवली अधिकेरी हो ॥ न० ॥ नर ठयल विराजे गाजे, वलि पडहा बहुविध वाजे हो ॥ २ ॥ न० ॥ गोखे बेठी गयगमणी, मन मोहे मृगा नयणी हो ॥ न० ॥ कपूरे करुला कीजे, रंग नरी आलिंगन दीजेहो ॥ ३ ॥ न० ॥ गढ कोट नदि वन वाडी, दीसे उगाह दीहाडी हो ॥ न० ॥ एक वणज करे वणजारा, कर दाण न भंभ लिगारा हो ॥ ४ ॥ न० ॥ कास्मीर लाहोर अटारो, सोदागर अंत न पारो हो ॥ न० ॥ पंजायत दीप परारा, दक्षिण गुर्जर धरारा हो ॥ ५ ॥ न० ॥ कर अकर न विकरे वराति, नरे नोग न माप मुकाती हो ॥ न० ॥ पर छिपे प्रवहण पूरे, देसांतर सा

फ सनूरे हो ॥ ६ ॥ न०॥ कुसल क्षेमे घर आवे, उछव करी नारी वधावे हो ॥ न० ॥ कोटीधर माया जंनो, परदेशें पहुचे हूंनो हो ॥ ७ ॥ न० ॥ माहाजन सुखीया सुविशेषो, लाखे कोडे नही लेखो हो ॥ न० ॥ देवल जिन हरि हर दीपे, जाणे मंदर गिरि जीपे हो ॥ ८ ॥ न० ॥ पोशाले धरम सुणावे, वडेरा निशाल जणावे हो ॥ ॥ न० ॥ बहु होम यग्न ध्वनि ज्ञानी, हरीचंद तणी राजधानी हो ॥ ए ॥ न० ॥ विप्र दीसे वेद जणंता, हाहें होकार करंता हो ॥ न० ॥ तिहां दीन दुखी नही कोई, सुखवासी लोक सहु कोई हो ॥ १० ॥ न० ॥ ए ढाल कही इम बीजी, सांजलीने करजो जीजी हो ॥ न० ॥ मुनि कनकसुंदरनी वाणी, सुणता रस अमीय समाणि हो ॥ ११ ॥ न० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नवरंगीनगरीतिहां, श्रीहरीचंदनरिंद ॥ तेज प्रतापे आगलो, दीपे जेम दिणंद ॥ १ ॥

न्याय नाव राजा निपुण, सूर सुनट सत्यवंत ॥
मन वयणे पोषे प्रजा, वन तरु जेम वसंत ॥ २ ॥
साहसीक नृपति सबल, धरे सदा दृढ धर्म ॥
वीर विचक्षण अति चतुर, जाणे सगला मर्म ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी राग ललित रामगिरि ॥ सर
णीयानी देशी चोपाइमां ॥

॥ विलसे राजा विविध प्रकार, सत्तावीश अंते
उरनारि ॥ हय गय रथ पायक परिवार, सूरवीर
नो अंत न पार ॥ १ ॥ बीजा मणि माणिक नंमार'
रयण जेटला समुद्र मफार ॥ मोहोटा नृप तस
नामे शीस, इंद्र जिसो जाणे अवनीस ॥ २ ॥
सति सुतारा सुंदरि नार, पटराणीसुं प्रेम अ
पार ॥ मतिसागर मंत्रि मतिवंत, सामि धर्म
साचो सत्यवंत ॥ ३ सकल कला गुण मणि का
मनी, प्राण प्रीय पीउ मन गामनी ॥ पूर्णचंद्र
वदनि निकलंक, लघींत केसरी सम कटी लंक ॥
॥ ४ ॥ कीकी नमर कमलदल जिसी, विकसित लो
यण सोहे तिसी ॥ सूक्ष्म रेषा काजल सारी, म

धुकर बेग बाह पसारी ॥ ५ ॥ कांने रवि कुंमल जल हले, अंधकार क्षण क्षण मांहें टले ॥ कोकिल कंठ सरिखो क्षीण, मणिधर श्याम भुयंगम वेण ॥६॥ पीन पयोधर तुंबा जिसा, अमृत कलश विराजे तिसा ॥ हंस गयंद अनोपम गेलि, जाणे अभिनव मोहन वेलि ॥ ७ ॥ अधर प्रवाली हीरा दंत, पावस वीज जिसी झलकंत ॥ अधर रंग तंबोल रसाल, सति शील सीता सुविसाल ॥ ८ ॥ रूपे रंभा लाजी रही, त्रिभुवन नारी उपम नही ॥ देव जगति सहगुरुनी सेव, पतिव्रता धर्मधरे नित मेव ॥ ९ ॥ राजा राणी वाक्यं ॥ गाहा गूढा अरथ अपार, राग रंग गुण गीत प्रचार ॥ बोले चौबोला सुविचार, प्रत्युत्तर आपे तत्काल ॥ १० ॥ राज्ञीवाक्यं ॥ एकनारी अति सुंदर रूप, प्रथवि मांहें अधिक अनूप ॥ चतुर तणे मनमांहे तेह, पंच सखीसुं घणो सनेह ॥ ११ ॥ ऊंची चढि नीची उतरे, सुर नर नाग असुर मनहरे ॥ चरण घणा पण चाले नही,

वस्त्रघणा ने उघाडी रही ॥ १२ ॥ नजिमे अन्न
नपीवे नीर, गुह्य निराखे नपट अधीर ॥ पर न
रचुं पर उपगारणी, पुत्रजणे पण ब्रह्म चारणी॥
॥ १३ ॥ फल लागां पण वंध्या सही, प्राण व
ह्नन कहो ते कुणकही ॥ तिण कारण मुज मन
संदेह, कहो प्रीतम कुण नारि तेह ॥ १४ ॥ रा
जावाक्यं ॥ नव मंगल रूपी ते नारि, कहीयें सुख
करणी संसार ॥ रमणि सुर नर रलिया मणी, वारु
सुंदर सोहामणी ॥ १५ ॥ लीलावंती मोहन
गारि, पंच वरण धुरि अक्कर नारि ॥ एम अनेक
गुणनेद प्रकास, पंच विषय सुख लील विलास ॥
१६ राजा राणी विलसे नोग, नमर केतकी जिम
संयोग ॥ मनरंगें सुख लीला रमे, एक निमेष वि
रहो नवि खमे ॥१७॥ कंत तणे मन मानी इसी,
नयन मांहेलि कीकी जिसी ॥ कहे तिका विध
राजा करे, जीवन प्राण जिसी आदरे ॥ १८ ॥
सोहागणि साची ते नार, जे मनमानी निज न
रतार ॥ सबल शील जिणमांहे सही, तिणसुं

प्रीतम विरचे नही॥ १९ ॥ श्लोक ॥ कोकिलानां स्वरं रूपं, वनेरूपं तपस्वीनां ॥ वियारूपं कुरूपानां, नारिरूपं पतिव्रता ॥ २० ॥ चोपाइ ॥ विचविच मनराखे वैराग, शील प्रताप घणो सोजाग ॥ दान शील तप नाव विचार, धरे धर्म मन चार प्रकार ॥ २१ ॥ आराधे अरिहंत नवकार, जीव दया जयणा सुविचार ॥ वर्जे जीव मारंता लोक, इण दृष्टांते सांजलो श्लोक ॥ २२ ॥ यद यतूकांचिनमेरु,कृष्णाचेववसुंधरा ॥ एकस्यचेवतां दया, नचकुल्यांयुधिष्टिर ॥ २३ ॥ चोपाइ ॥ जाणे एह संसार असार, दुःख अनेक तणो जंमार ॥ वीतरागनां धर्म विहीण, मुगति नपामे को मति लीण ॥ २४ ॥ साधु सुगुरु सेवा सुविसाल, पात्र दान दीजे उजमाल ॥ जन्म थयो गोवालने घरें, रूद्धि लहे सालिजइनी परें ॥ २५ ॥ सूधो शील मुगति दातार, शील विना पामे नही पार ॥ सूलितें सिंघासण थयो, शेठ सुदर्शन संकट गयो ॥ ॥ २६ ॥ शील प्रताप सुनद्रा सति, चालणि

जल काढयो जिन मति ॥ चंपापोलि उघाडी जिणे, प्रहउठी प्रणमीजे तिणे ॥ २७ ॥ ब्राह्मी चंदनबाला मति, इत्यादिक जे शोले सति ॥ शिवपुर पद पाम्युं अभिराम, पाप जाये समरंता नाम ॥ २८ ॥ सूधो त्रिविध पालंता शील, शिव पद अविहड लहीए लील ॥ जंबुस्वामिने आइकुमार, कयवन्नो धन्नो अणगार ॥ २९ ॥ बार कोडी धन विलस्यो जेण, मुगति पुहुतो श्रीनंदिषेण ॥ कूड कपटि लडवारी लबार, ते नारद ऋषि पाम्यो पार ॥ ३० ॥ तप विण शिव पुर लहीये नहीं, तपविण कर्म न तूटे कहीं ॥ जुवो हरिकेशी चंडाल, दृढप्रहारी पापी विकराल ॥ ॥ ३१ ॥ तप तपीने निर्मल थयो, कर्म खपावी मुगते गयो ॥ भाव विना पण मुगति न होय, भाव समोवड धर्म न कोय ॥ ३२ ॥ यतः ॥ दानेनप्राप्यतेलक्ष्मी, शीलेनप्राप्यतेयशः ॥ तपस्यांक्षीयतेकर्म, भावेनमोक्षसंपदा ॥ ३३ ॥ चोपाइ ॥ वीरवंदण ददूर मनरंग, जातां चांप्यो च

पल तुरंग ॥ पश्चाताप करे अंदोय, जिनवर दरि शण करवा मोय ॥ ३४ ॥ कर्म कठिण दर्शण नवि थयो, ध्यानधरी सुर लोके गयो ॥ नाव धरी जो दीजे दान, तेह तणो फल एक प्रधान ॥ ३५ ॥ नावविनातो नपले शील, अणमिलते गंगेव अहिल ॥ धन यौवन मिलियो संयोग, शय्या शील लजे सुरलोक ॥ ३६ ॥ नावे तप तपिये ते खरो, नवियण नाव सदा मनधरो ॥ दान शील तप नावे करी, शीघ्रं वरीये शिव सुं दरी ॥ ३७ ॥ इसोनाव राणी मनवस्यो, कुंदन उपर हीरो कस्यो ॥ सुरत संजोग तणा सुख सार, नाग लता चंदन नरतार ॥ ३८ ॥ इम लीनो हरिचंद नरिंद, नारी सुतारा नयणानंद ॥ एक थंनो उंचो आवास, विलसे दंपति लील वि लास ॥ ३९ ॥ राजा राणी रंग रसाल, कनक सुंदर कहे त्रीजी ढाल ॥ सुणातां रीझे चतुर सु जाण, उठी परहा जाये अयाण ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस हरिचंद गयो, वन क्रीडा बहु सेण ॥
साधु एक मोटो महंत, बेठो दीठो तेण ॥ १ ॥
राजा पग प्रणमी करी, बेठो मुनिवर पास ॥ सा
धु सुणावे देशना, हरिचंद सुणे उल्लास ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ रागकाफी हुसेनी ॥
निंणदी लोयणा ॥ ए देशी ॥

॥ दुःख सागर संसार ए,सायर भव नारि लाल ॥
चतुरनर चेति ए ॥ काम क्रोध मद लोभए, दु
खके अधिकारी लाल ॥ १ ॥ च० ॥ मोह मि
थ्यात न राची ए, जीउ जोइ विमासी लाल ॥
॥ च० ॥ लाख चोरासी जीउरा, भमे योनि म
झारी लाल ॥ २ ॥ च० ॥ दान शील तप भा
वना, ए नावें निबंधी लाल ॥ च० ॥ भवसाग
रके पारकुं, पामे एह प्रबंधी लाल ॥ ३ ॥ च०॥
देव एक अरिहंत है, साधु सुगुरु सूधा लाल ॥
॥ च० ॥केवलि धर्म प्रकासीया, नृपति प्रतिबुधा

लाल ॥ ४ ॥ च० ॥ दीधी त्रण प्रदक्षिणा, उत्त रासण ठाये लाल ॥च०॥ मुनिवर वंदि नावसुं, निज मंदिर आये लाल ॥ ५ ॥ च० ॥ समकित व्रत नृप आदरे, आणंद अंग न माये लाल ॥ ॥ च० ॥ अंग उमंगे महिपति, मन नरम गमा ये लाल ॥ ६ ॥ च० ॥ भेद जणाये नारिकुं, स मकित महिमा लीने लाल ॥ च० ॥ जन्म सफल अब जाणीये, देही पावन कीने लाल ॥७॥च०॥ दान महिपति देतहे, अब होत वधाइ लाल ॥ ॥ च० ॥ घर घर गुडि उछले, निसाणे घाये लाल ॥ ८ ॥ च० ॥ प्रथम खंम पूरो हुवो, ह रिचंद नरिंदा लाल ॥च०॥ परमानंदनी संपदा, सुरलोक सुरिंदा लाल ॥ ९ ॥ च० ॥ श्रीभावड गढ नृपति, मणिरत्न मुणिंदा लाल ॥ च० ॥ स गुरु श्रीउद्यकायजी, कर हुं आणंदा लाल ॥ १० ॥ ॥ च० ॥ कनकसुंदर शिष्य वीनवें, प्रभु चरण प सायाा लाल ॥ च० ॥ चोथी ढाल रसाल ए, शृं गार रस गाया लाल ॥ ११ ॥ च० ॥ इति श्रीक

नकसुंदर विरचितायां श्री हरिचंद तारालोचनी चरित्रे सत्य शीलाधिकारे नवरस वर्णन मध्ये श्रृंगार वर्णन नाम्नो प्रथम खंड संपूर्ण ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री सदगुरु प्रणमुसदा, सिद्धि दाय सुविशेष ॥ भावड गच्छ मुगटा मणि, श्रीउपाध्याय महेस ॥ १ ॥ हवे बीजो खंड बोलसुं, हरिचंद सत्य अधिकार ॥ विरहागम विक्रय करण, राणी राजकुमार ॥ २ ॥ इणे अवसर सुरलोकमें, सभाए बेठो इंद ॥ एम भाखें नर लोकमें, सबल सत्य हरिचंद ॥ ३ ॥ सूरवीर अति साहसी, दीसे राजा सोय ॥ आजतणे वारे तिहां, अवर नदीसे कोय ॥ ४ ॥ मिथ्याति माने नही, इंद वचन सुर एक ॥ मुज आगल कुण मानवी, राखे निश्चल टेक ॥ ५ ॥ पूरवभव संतापीया, विण अपराधे साध ॥ वैर संभाख्यो आपणो, देशें दुःखअगाध ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ पहेली ॥ राग केदारो ॥ नरेसर नेटचो साहस धीर ॥ ए देशी ॥

॥ देवपरीक्षा आवियोजी, मानव लोक म ऊार ॥ अयोध्यानी पाखतिजी, बाग रच्यो वि स्तार ॥ १ ॥ महिपति वीनतडी अवधार ॥ ए आंकणी ॥ करजोडी तापस कहेजी, दुःख अ मारा वार ॥ २ ॥ महिपति० ॥ वी० ॥ तापस ब हुविध उतस्याजी, तापसणि परिवार ॥ जटाजूट ते जंगमीजी, साथें शिष्य अपार ॥ ३ ॥ म० ॥ एकदिन तापस आवीयोजी, राजसन्ना मन रंग ॥ नृप आगल उनो रह्योजी, ललाट आणी अंग ॥ ४ ॥ म० ॥ राय करे तस वंदनाजी, दीधो आदर मान ॥ दीन वचन ऋषि वीनवेजी, सुण हरिचंद राजान ॥ ५ ॥ म० ॥ अविचल उत्र तु मारडोजी, तुं ने प्रजा सुखकार ॥ तेजे सूरज सारि खोजी, दाने जिस्यो जलधार ॥ ६ ॥ म० ॥ ता पस बहु परदेशनाजी, वस्या तुमारे वास ॥ मोटो राजा तुं सहीजी, वयरी जाये नास ॥ ७ ॥ म० ॥

सगलो वात सोहिलोजी, तापस दे आशीश ॥ सूअर एक अमारडेजी, अरि सबलो अवनीश ॥ ॥ ८ ॥ म० ॥ मारि ताडि दूरें करोजी, माख्या तापस चार ॥ नव तापसणी संहरीजी, दशमी माहारी नार ॥ ए ॥ म० ॥ वारु राये वीनव्यो जी, तेहने दीधी शीख ॥ जे तुमने नित दुह वेजी, तेहने हुं उलीख ॥ १० ॥ म० ॥ तापस आश्रम आवियोजी,राय चढयो ततकाल ॥ ते व नमांहि आवियोजी, चतुरंग दल नृपाल ॥११॥ ॥ म० ॥ दीठो सूवर दोडतोजी, नरि करि मूक्यो बाण ॥ गरभ सहित हरणी हणीजी, चिंता पडि असमाण ॥ १२ ॥ म० ॥ पहिली केदारा तणीजी, दाखी ढाल रसाल ॥ कनकसुंदर मन रंजियाजी, सांभलि बाल गोपाल ॥ १३ ॥ म० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्रि प्रते राजा कहे, मतिसागर सुणवात ॥ में प्रायश्चित मोटो कीयो, अधर्मनो अवदात ॥ ॥ १ ॥ ए पातिक किम छूटशे, कीधो खोटो का

म ॥ अरति परति हास्या विना, नरके नही मुझ ठाम ॥ २ ॥ अपराधि मुझ सारिखो, अवर नही जग कोय ॥ कर्म सबल मुज सिर चढ्यो, किम निस्तारो होय ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ रागगोडी ॥ मनज
मरारे ॥ ए देशी ॥

॥ राजा हरिचंद चिंतवें, मे कीधोरे ॥ मारी अबला बाल, पापमें लीधोरे ॥ हुं अपराधि पापियो, मे०॥ जन्म थयो विसराल ॥ १ ॥ पा० ॥ हिरण एकलो विलविले ॥ मे० ॥ देसे मोहे सराप ॥ पा० ॥ जे गति ए बिहु जीवनी ॥ मे० ॥ सो गति करसुं आप ॥ पा० ॥ २ ॥ तापस आयो दो हतो ॥ मे० ॥ हरणी मारि केण ॥ पा० ॥ भस्म करुं नरके धरुं ॥ मे० ॥ विंधी मृगलि जेण ॥ ॥ पा० ॥ ३ ॥ हरिचंद पगलागी कहे ॥ मे० ॥ सबलो पाप अघोर ॥ पा० ॥ जे विध दाखो ते करूं ॥ मे० ॥ केहो कीजे सोर ॥ ४ ॥ पा० ॥ ध्रुजे राजा धड हडे ॥ मे० ॥ हाहाकरे हरिचंद ॥

॥ पा० ॥ विहुं आंखे आंसु झरे ॥ मे० ॥ नामे शीश नरिंद ॥ ५ ॥ पा० ॥ राज समपुं माहरो ॥ ॥ मे० ॥ हुंजाउं एक पोत ॥ पा० ॥ अंग करो मुझ निर्मलो ॥ मे० ॥ दूर निवारो गोत ॥ ६ ॥ ॥ पा० ॥ चेलो गुरुने वीनवे ॥ मे० ॥ वचन सुणो रुषिराज ॥ पा० ॥ पाप उतारो एहनो ॥ ॥ मे० ॥ आपे सहु रुषिराज ॥ ७ ॥ पा० ॥ राज दीयो तापस भणी ॥ मे० ॥ शिष्यबोल्यो वलि एक ॥ पा०॥ माहारि हिरणी किणे हणी ॥ ॥ मे० ॥ प्रव्वाजुं सुविवेक ॥ ८ ॥ पा० ॥ राय मनावें तेहने ॥ मे० ॥ देसुं लाख दिनार ॥ पा० ॥ स्वस्ति भणावी एटले ॥ मे० ॥ हे हे कर्म विकार ॥ ए ॥ पा० ॥ मंदिर राजा आवियो ॥ मे० ॥ बारी मांहे होय ॥ पा०॥ राजा हरिचंद सुं कियो ॥ मे० ॥ लोक कहे सहु कोय ॥ १० ॥ पा० ॥ पट राणी पासें गयो ॥ मे० ॥ उभी आगल आइ ॥ पा० ॥ नारी सुतारा वीनवे ॥ मे० ॥ प्रीतम चिंता कांइ ॥ पा० ॥ ११ ॥ चिंता सायर जेटली ॥ मे० ॥ सुंदरि सां

जल वात ॥पा०॥ राज रुधि उदकी करी ॥मे०॥ कीधो निर्मल गात्त ॥ १२ ॥पा० ॥ मारि सगली हरिणली ॥ मे०॥ पाप कीयो परिहार ॥ पा० ॥ मंम कीयो शिर माहरे ॥मे०॥ एक लाख दिनार ॥पा०॥१३॥ बीजी ढाल पूरि कही ॥मे०॥गोडी राग मलार ॥ पा०॥ कनकसुंदर मुनि वीनवे, ॥ मे० ॥ सत्यवादि सुखकार ॥ १४ ॥ पा० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग सारंग मल्हार ॥

॥ नणदलनी देशी ॥

॥ नारि सुतारा वीनवे, सांभल प्राण आधार हो ॥ प्रीतम ॥ चिंता किसी मनमे करो,केहना धन भंमार हो ॥ १ ॥ प्री०॥चिं०॥ पाप गमायो आपणो, निर्मल कीधो अंग हो ॥ प्री० ॥ देशांतर हवे साधशुं, अंग धरो उछरंग हो ॥ प्री० ॥ ॥ २ ॥ जेसूरा अति साहसी, जे साचा सत्यवंत हो ॥ प्री० ॥ देशांतर तेहने किस्या, पग पग सुख अनंत हो ॥ ३ ॥ प्री० ॥ जन्म कृतारथ जाणीये, जे पातिक वरजीत हो ॥ प्री० ॥ सत्य

साहस चूकेनही, तेहने केइ चिंत हो ॥ ४ ॥
॥ प्री० ॥ त्रीजी ढाल सोहामणी, राग सारंग म
ल्हार हो ॥ प्री० ॥ कनकसुंदर नृप धीरचे, राणी
निज नरतार हो ॥ प्री० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तापस आव्यो एटले, राज भवन तिणि
वार ॥ रेरे पापी माहरा, देतुं लाख दिनार ॥
॥ १ ॥ रायें मंत्रीसर तेडियो, बोल्यो एहवी भा
ख ॥ काढो धन भंभारथी, आपो एहने लाख ॥
॥ २ ॥ तापस त्रटकी बोलीयो, रिद्ध अमारी
एह ॥ ए मांहेसुं ताहरो, तुं मुझ आपे जेह ॥३॥
तव राजा नगरी तणो, तेडी माहाजन पास ॥
बे कर जोडी वीनवे, हरिचंद वचन विकास ॥४॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग सिंधु ॥ चरणाली
चामुड रण चढे ॥ ए देशी ॥

॥ माहाजनसुं राजा वीनवे, वचन सुणो सुवि
चारो रे ॥ में तुमने कदि दूहव्या, तो दाखो इणि
वारो रे ॥ १ ॥ मा० ॥ हो मेंतो दाण भंभ कीयो नही,

नदीयो कूडो आलो रे ॥ पुत्रतणी परें पालतो, करतो सहुनी संभालो रे ॥ २ ॥ मा० ॥ हो में दीठी अणदीठी करी, सुणीकरी असुणी जाणो रे ॥ चोलणि चालणि परिहरी, में न्याय कियो निरवाणो रे ॥ ३ ॥ मा० ॥ ज्युं वन तरुवर पांगरे, आयो मास वसंतो रे ॥ त्युं सगलि प्रजा माहरी, मुज बेगां विकसंतो रे ॥ ४ ॥ मा० ॥ ज्युं तरुवर सीचे सदा, मालि अरहट नीरो रे ॥ त्युं तुमनें हुं सींचतो, प्रेम नयन जलधारो रे ॥ ॥ ५ ॥ मा० ॥ हो तापस पण धरमातमा, में तेहने सुंप्यो राजो रे ॥ लाख मोहोर व्याजे करी, द्यो मुफने तुमे आजो रे ॥ ६ ॥ मा० ॥ ढाल कही चोथी भली, नीको सिंधु रागो रे ॥ कन कसुंदर माहाजन कहे, हवे राय तणो कुण लागो रे ॥ ७ ॥ मा० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुण राजा माहाजन कहे, द्रव्य नही अम पास ॥ लाख मोहोर किम संपजे, अवसर इणे विमा

स॥ १ ॥ वलतो नृप बोले नही, हार्यो वचन नरिंद ॥ गयो माहाजन फिरि ने सहु, एह करम हरिचंद ॥ २ ॥ दिन पहिडयां पहिडी सहु, लोक माहाजन मित्त ॥ पटराणी पहिडी नही, एहिज रूडी रीत ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग केदारो चंद्रावलानी देशी ॥

॥ राजा हरिचंद वीनवे रे, सुणो तापस मुज वात ॥ एक महिने आपसु रे, लाख मोहोर विख्यात ॥ १ ॥ लाखमोहोर आणी ने देसु, जे नकीया ते काज करेसुं ॥ देशांतर इणिवार चलेसुं, उसिंगल तुमचा थायेसुं ॥ २ ॥ जी राजेसरजी रे, हरिचंद राजा साहसी रे ॥ तव तेणेही तापसे रे, वचन कीयो परिमाण ॥ ३ ॥ वचन कीयो परिमाण जिवा रे, चाल्यो श्रीहरिचंद तिवा रे ॥ सत्य कर्म मन मांहि विचा रे, नारि सुतारा आइ लारे ॥ जीजी वनजीजी रे ॥ ४ ॥ जीवन प्राण आधार, वालिम माहरा रे ॥ पाय न छोडुं आज, प्रीतम ताहरा रे ॥ ५ ॥ पायन छोडुं ताहरा रे, आवीस ताहरे साथ ॥ विरह लिगार सहुं नहीरे, विलगी

प्रीतम हाथ ॥ ६ ॥ विलगी रही निज प्रीतम हाथें, स्वामि मयाकरि तेडो साथें ॥ हुं हजूर रहेसुं दिन रातें, विपत पाडुं नही बीजी वातें ॥ ॥ ७ ॥ जी प्रीतमजीजी रे ॥ जीप्रीतम आधार, हार हीया तणारे ॥ अंगतणा सिणगार, सलूणा साजणा रे ॥ ८ ॥ सयण सलूणे साहिबेरें, निरखि सलुणी नयण ॥ तव तापस आव्यो तिहारे, बोले एहवां वयण ॥ ए ॥ तापस वयण कहे अविचारी,वेगे आणो मोहोर हमारी ॥ साथे जाण नदेसुं नारी, राजरमणी रूधि सहु हारी ॥ ॥१०॥ जीराजे सरजीरें, जीराजेसर राय ॥ मंत्रि कहे सही रे, परनारि कुण लाग, जावा द्यो नहीरे ॥ ११ ॥ जाण न द्यो परनारिने रे, ए तुम नहीं आचार ॥ राणा पण दंमे घणो रे, पण न लीये पर नारि ॥ १२ ॥ पण न लीये परनारिने कोइ, एह अखत्रि किहां नवी होइ ॥ तापस हीए विमासी जोइ, मति सागर दाखे इम सोइ ॥ ॥ १३ ॥ जीराजेसरजी, जीराजेसर राय ॥ ता

पस कोपीयो रे, मंत्रि कर्यो सुक पंखि ॥ उ
डीने गयो रे ॥ १४ ॥ मंत्रिसर उडी गयो रे,
ध्रूज्यो राजा ताम ॥ ए आगल बोलुं नहीं रे,दीठां
एहनां काम ॥ १५ ॥ दीठां एहनां काम सवाया,
राज ऋद्धि रमणी धन माया ॥ राखो मुनि वरजे
मन जाया ॥ कनक सुंदर एह वचन सुणाया,
जीराजे सरजी रे ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तापस जावादे नही, राणी रहे नळगार ॥
विलवति इम वीनवे,सुणहो प्राण आधार ॥ १ ॥

॥ ढाल छठी रागसोरठी ॥ पीयारे हो
वालेसर रामजी ॥ ए देशी ॥

॥ वीनवे तारा लोचनीरे, सांभल प्राण पी
यार ॥ विण अवगुण मुज वालहारे, कांइ छोडो
निरधार ॥ १ ॥ रंगीलाहो राजिंद हरिचंदजी,
निरधारीहो वालेसर क्युं तजी ॥ छोडि नजाये हो,
निठुर नथाये हो, दिलतो सूरजी ॥ २ ॥ रं० ॥
ए आंकणी ॥ तूं मुज जीवन जीवनोजी, तुं ही

यडानो हार ॥ सोनागी शिर सेहरो रे, अंगतणो सिणगार ॥ ३ ॥ रं० ॥ तुं मुफ निमेष न वीसरे रे, ज्युं जल मीन जपंत ॥ तडफि मरुं हुं तुज विना रे, कमल नयण सुणी कंत ॥ ४ ॥ रं० ॥ लोटी नरि आगे धरुं रे, हुं ठउं तोरि दास ॥ किण आगल उनी रहुं रे, वालम हीयडे विमास॥ ॥ ५ ॥ रं० ॥ महिर करी मन मोहना रे, मुजने तेडो साथ ॥ आगल करीय पधारजो रे, हित करी जाली हाथ ॥ ६ ॥ रं० ॥ हुं अरधंगी ताहरी रे, तुं मुफ जीवन प्राण ॥ अंगतणी ठाया समीरे, सांजल कंत सुजाण ॥ ७ ॥ रं० ॥ दीयर परघर सासरो रे, सवि उजड मुफ मन्न ॥ जो तुम संग सदा रहुं रे, तो वेलावल रन्न ॥ ८ ॥ रं० ॥ शील रहे किम माहरो रे, वेडमें वसतां वास ॥ वली ए ता पस पापीयो रे, करसें शील विणास ॥ ए ॥ रं० ॥ प्राण हडे पण ना हडे रे, शील रयण समतोल ॥ एक शील नग उपरे रे, सहस तापस ल्यो मोल॥ ॥ १० ॥ रं० ॥ तुम वेचे विक्रय करुं रे, तुज मारे

मरीजाउं ॥ वारि सहस हुं वारणा रे, नहीं तुम मीणे नाम ॥ ११ ॥ रं० ॥ हुं नहीं छोडुं साहिबा रे, चरण कमल तुम वास ॥ सनमुख जुवो सुंदरी रे, उनी करे अरदास ॥ १२ ॥ रं० ॥ चंद्मुखी इम वीनवे रे, वलि वलि अबला बाल ॥ तन मन तारालोचनी रें, प्रियसुं प्रीति रसाल ॥ ॥ १३ ॥ रं० ॥ केसरि लंकी कामिनी रे, मृग नयणि मूंछाय ॥ उनीथी घर आंगणे रे, धरणी ढलि धसकाय ॥ १४ ॥ रं० ॥ सीतल नीरें सुंदरी रे, छांटयो सतप शरीर ॥ दासी करग्रही वींजणो रे, लावे सीत समीर ॥ १५ ॥ रं० ॥ चंदन लेपन बावना रे, उनी करिय सचेत ॥ प्रीय मुख देखी पदमणी रे, नीर झरें मृग नेत्र ॥१६॥रं०॥ ढाल बीजेखंडमें कही रे, छठी सोरठ राग ॥ सुणतां जोगी सुख लहे रें, वैरागी वैराग ॥ १७ ॥ रं०॥

॥ दोहा ॥

॥ कुंतल सेवक नृपतणो, तापसने कहे वात ॥ रे पापी तापस नही, अधम तणा अ

वदात ॥ १ ॥ पुत्र विछोहो मातनो, नारि वि
छोहो कंत ॥ अघ अघोरए किम मिटे, जां ससि
सूर तपंत ॥ २ ॥ तव तापस कोपे चढ्यो, कुं
तल कीधो शीयाल ॥ वडवडतो रणमें गयो,
चित्त चमक्यो नूपाल ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग आशावरी सिंधु ॥
प्रणमीपास जिणंद परधान ॥ ए देशी ॥

॥ रायकहे सांजल रुषिराया,राज रमणी राणी
धन माया ॥ राखो जे तुम आवे दाया, कांहि
कीजे कोप कसाया ॥ १ ॥ नारि सुताराने शी
लवंति, माहरे मन मानति माहंति ॥ ब्राह्मि उ
पम अधिक लहंति, कूड कपट नकोइ कहंति ॥
॥ २ ॥ सूरज पश्चिम दिसिजो ऊगे,पांगुलो मेरु
शिखरने पूगे ॥ महा उदधि मरजादा मूके, सति
सुतारा शील नचूके ॥ ३ ॥ गिरिशिर कमल तणो
वनहोइ, माखण काढे नीर विलोइ ॥ पाणी
मांहें अग्निजो लागे, सति तणो व्रत किमहीं न
भागे ॥ ४ ॥ मेरु शिखर ध्रु चले कदापि, खर

बोले षटराग आलापि ॥ क्षमावंत मुनिवर पण कोपे, नारि सुतारा शील नलोपे ॥ ५ ॥ जैसी कोमल कांब कणेरी, जैसी कुंपल पीपल केरी ॥ जैसी मैंणनी पुतली जाणो, तैसी कोमल नारि वखाणो ॥ ६ ॥ ए नारी मुख बोली न जाणे, ए नारी मन गर्व नआणे ॥ ए नारी मन मत्सर नांही, दयावंत ए छे मन मांही, ॥७॥ ए हने में नदीयोरे कारो, सुपनेही नकह्यो जी कारो ॥ वचन कठोर न में बोलाइ, रीसाणी क्षण मांहें मनाइ ॥ ८ ॥ एहने मुनिवर गाल म देजो, धर्म सुता ते करिने लेजो ॥ रांधण इंधण काम म देजो, शीलतणा एहना गुण लेजो ॥९॥ ए मुज जीवन सम जाणेजो, एहने कठिन वचन मत कहेजो ॥ ए पासे म अणावशो पाणी, अति सुकमाल अछे एराणी ॥ १० ॥ रोहीताससुं ध रजो रंग, नणसे पंमित चेला संग ॥ वांछित मीठा मोदिक देजो, बालक आपणु करि जाणेजो ॥ ॥ ११ ॥ टाकर कांब पाटु मत मारो, जेमारे ते

हित करी वारो ॥ चेलाने तुमे कहेजो सामी, मत लडसो इणसुं अभिरामी ॥ १२ ॥ हितकारी फेरी माथे हाथ, भणावजो लघु कुलक साथ ॥ अ कल प्रमाणे सूत्र भणाजो, वेद पूराण वखाण सु णाजो ॥ १३ ॥ मत दूहवशो मत रीसाशो, कु मया करी अविनय मकराशो ॥ घणुघणु तुमनेसुं कहीयें, भलाबुरा पण जे निरवहीये ॥ १४ ॥ मोहोटा मनमे कोप न आणे, मोटा शत्रु मित्र समजाणे ॥ तुमेहो तापस दीन दयाल, तुमेहो तापस परम कृपाल ॥ १५ ॥ तुमेहो तापस खीर मुणिंद, तुमेहो तापस दिनदिणंद ॥ तुमेहो तापस तप साधन्न, तुमेहो देव जिसा म्हारे मन्न ॥ १६ ॥ तुमेहो तापस करुणा गेह, तुमेहो तापस ब्रह्म देह ॥ तुमेहो तापस परम पुनित, तुमेहो तापस अकल अजीत ॥ १७ ॥ में मृगलि निरपराध वि राधि, हुं पापी सबलो अपराधि ॥ इम कही राजा आघो चाल्यो, मन पाखे मेलीने हाल्यो ॥ ॥ १८ ॥ डुर्वासा तापसें बोलायो, दोडीराजा

पाछो आयो ॥ नारि पुत्र दीया तस बेइ, राजा ह
रिचंद साथे लेइ ॥ १ए ॥ राजा मनमां गाढो
रंज्यो, मननो जरम तिवारें जंज्यो ॥ सुंदरि सुत
स्वामि ससनेह, सुकृत खेति वुग्यो मेह ॥ २०॥
उंघ्याने पाथरियें तलाइ, अमलियाने अमल ख
वाइ ॥ जुख्या नरने खीर जिमाइ, तरश्या नीर
पीये सुखदाइ ॥२१॥ जमरें लाध्यो कमलनो वन्न,
तिम उलस्युं हरिचंदनुं मन्न ॥ पगपंथे चाल्या प
रदेश, आव्यो उजल वेडि नरेश ॥ २२ ॥ लोक
नगरना हाहा करता, उना मुक्या आंसु ऊरता ॥
कर्म करेते सत्य विचार, सुखने फुःख ते कर्मनी
लार ॥ २३ ॥ बीजो खंम थयो संपूर्ण, हरिचंद
नृपनो फुःख अंकूरण ॥ वनवासे राजा परवस्यो,
सुंदरी सहित गहन संचस्यो ॥ २४ ॥ त्रीजे खंम क
हीस अधिकार, कठिन कर्मगति एह विचार ॥
साते ढाल रसाल वखाणी, सुणतां प्रतिबुजे उ
त्तम प्राणी ॥ २५ ॥ श्रीलावड गछ कमलदिणंद,
तस गुरुश्री मणि रत्नसुणिंद ॥ आशितलब्धि अ

नंत उवझाय, कनकसुंदर कहे तास पसाय ॥ ॥ २६ ॥ इति श्री कनकसुंदरगणि विरचिते शील स्त्वाधिकारे नवरस वरणने करुणारस वर्णन नाम्नो द्वितीय खंम संपूर्ण ॥

॥ अथ तृतीय खंम प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजे खंमें प्रणमुं,सानिध्यकारी देव ॥ सद्गुरुने श्रीसारदा, सहस किरण प्रणमेव ॥ १ ॥ राजरूधि रमणी सुता, देश हुउं परदेश ॥ अल हाणा वनमे चल्या, श्रीहरिचंद नरेश ॥ २ ॥ जे दिन दित्त न आपणो, तेदिन मित्त न कोय ॥ कमल नदिने बाहिरो, दिणयर वैरी होय ॥ ३ ॥ राणी पग लोही करे, पत्थर खूचे पाय ॥ चरण सकोमल कमल दल, चंइ वदन कमलाय ॥४॥ हो प्रीतम हो वालहा, हो तन जीवन प्राण ॥ खिण एक गया विसमो, सांजल कंत सुजाण ॥ ५ ॥ कर सुं करग्रहि कामिनी, कांधे करी रोहितास ॥

विसामो खिण खिण विचे, चाले लील विलास ॥
॥ ६ ॥ दुःख मकरे गज गामिनि, मृगनयणि मन मांहिं ॥ सुख दुःख बेहु सारिखां, निबंध पल टे नांहिं ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग केदारो विरहि मल्हार ॥
आज विमलगिरि भेटसुंहो, सहीयर, आ
दिसर जिनराय ॥ ए देशी ॥

॥ हरिचंद मनमांहिं चिंतवे हो, आतम ॥ कर्म न छूटे कोय ॥ दुःख नवि धरिये सांजलो हो, आ तम ॥ कर्म करे तेम होय ॥ १ ॥ दोप न दीजे कोयने हो ॥ आ० ॥ कर्म विटंबन हार ॥ कर्म रुलावे जीवनें हो ॥ आ० ॥ नवनव दुःख अपा र ॥ २ ॥ कर्म प्रमाणे पामसे हो ॥ आ० ॥ ल खमण बंधव राम ॥ सीता रावण लइजसे हो ॥ ॥ आ० ॥ कर्मतणा ए काम ॥ ३ ॥ कर्म प्रमाणे नीपजे हो ॥ आ० ॥ क्षेत्रें वाव्युं धान ॥ काने खीला गोकीया हो ॥ आ० ॥ नवि छुटया वर्द्ध मान ॥ ४ ॥ कर्म तणी गति एहवीहो ॥ आ० ॥

मुक्ति सजीवन दान ॥ सुर नर कर्मैं विटंबीया हो ॥ आ० ॥ तोहुं केहे ग्यान ॥ ५ ॥ आगल आवी चालतां हो ॥आ०॥ गंगानदि असराल ॥ दूध सरीसो उज्ज्वलो हो ॥ आ० ॥ जल जेहवो सुविसाल ॥ ६ ॥ हंस विराजे पांखती हो ॥ ॥ आ० ॥ नीर हीलोले जाय ॥ सुक बक पंखी सारीका हो ॥ आ० ॥ बेग केलि कराय ॥ ७ ॥ तट आवीने उतस्या हो ॥ आ०॥ बहुविध पूरित दुःख ॥ बालक सोहग सुंदरु हो ॥ आ० ॥ तेहनें लागी भूख ॥ ८ ॥ आडोमांझे आवटे हो ॥आ०॥ रोवे रीझें सोय ॥ सहजे गोरू एहवां हो ॥ आ० ॥ मरम नजाणे कोय ॥ ए ॥ यतः ॥ राजा वेश्या यमो वन्हि ॥ प्राहुणो बाल याचकः ॥ परपीडा नजानाति, अष्टमो ग्राम कोटकः ॥ १० ॥ ढाल पूर्वली ॥ माय समझावे पुत्रने हो ॥ आ० ॥ रोय म राजकुमार ॥ ढाल प्रथम मुनि वीनवे हो ॥ आ० ॥ राग भले केदार ॥ ११ ॥ गंग विमल दल दंपती हो ॥ आ० ॥ आस्थान कीयो सुवि

चार ॥ थाक उतार्यो आपणो हो ॥ आ० ॥ कनक सुंदर सत्यधार ॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ बालक रोवे रडवडवे, आकुल व्याकुल होय ॥
नान्हडीयो कुरव्यो घणु, सात वर्षनो सोय ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ रागगोडी नथगइ मेरी
नथगई ॥ ए देशी ॥

॥ लाडुदे मोने लाडुदे, लाडुदे माता लाडुदे॥ लाडुदे मोने पेडादे, गुंदपाक गुंदवडांदे ॥ १ ॥ ॥ मो० ॥ मुरकी मांफा मोतीचूर, लुची लापसी घेवर पूर ॥ मो० ॥ खाजा ताजा वेग अणाव, फरहरती सी जलेबी लाव ॥ मो० ॥ २ ॥ सेवसुहालिने सतपुडी, दालिना लाडुदे मावडी ॥मो०॥मगदल मिठा कोहोला पाक, कीटीना लाडुदे आप ॥ मो० ॥ ३ ॥ षटरस आणीदे रे समी, सरस मिठाइ अमृत समी ॥ मो० ॥ फीणी नुखती सीरा तूत, चारोलि नालेर मागे पूत ॥ मो० ॥ ४ ॥ सालि दालिने सूरहाघीय, जीमावो मोने माताजी

य ॥ मो० ॥ तलिया पापड साकर खीर, दे माता अब मकर बधीर ॥ मो० ॥ ५ ॥ साकर नेली सीखरणि दही, लवंग एलची आणो सही ॥ बालक वचन सुणी माय बाप, राजाराणी झूरे आप ॥ मो० ॥ ६ ॥ किसुं संतापे पूत्र अबुझ, लाडु किहांथी आपुं तुझ ॥ मो० ॥ बीजी ढाल ए श्रावक सुणो, दूव नबूटे बालक तणो ॥मो०॥७॥

॥ दोहा ॥

॥ माता बालकने कहे, नेडो दीसे गाम ॥ तिहां जइ लावी आपसुं, धीर धरो वत्स ताम ॥ ॥ १ ॥ माता संपति क्युंमिटी, दशाघटी किम आज ॥ किहां जास्यां करस्यां किस्युं, किहां अयोध्या राज ॥ २ ॥ बेटा बोलीजें नही, करम करे ते प्रमाण ॥ तुज पिताना पुन्यथी, थासे जय कल्याण ॥ ३ ॥ बालक बत्रीश लक्षणो, मान्यो वचन प्रमाण ॥ वलतो अण बोल्यो रह्यो, समज्यो चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ अहो झरमर वरसे मेहके
नीजे चुंदडी रे केनी० ॥ ए देशी ॥

॥ अहो तिण अवसर तिहां एक के, आवी झोकरी रे के ॥ आवी०॥ मोदक नरीयो माट के, संबल सिर धरी रे के ॥ सं०॥ धूजे कंपे शरीर के, निजर नही तिसी रे के ॥ नि० ॥ ओढण धवलो वेशके, देवी हुए जिसी रे के ॥दे०॥१॥ मुखे एहवी वाणिके, ते देवी वदे रे के ॥ ते० ॥ अयोध्यानो पंथके, कोइक दाखवे रे के ॥ को६० ॥ देखावे को इ मार्गके, झावो जीमणो रे के ॥ झा०॥ एह करे उपगारके, लेउं तस नामणो रे के ॥ लेउं०॥ २ ॥ उठ्यो श्रीहरिचंदके, बोल्यो आवीने रे के ॥ बो०॥ करग्रही आणी तासके, पंथ बतावीने रे के ॥पं०॥ राजा हरिचंद पासके, बेठी झोकरी रेके ॥ बे० ॥ धरति निजर निहाड के, जोवे हित धरी रे के ॥ जो० ॥ ३ ॥ रे बेटा हरिचंदके, क्युं बेठो इहां रे के ॥ क्युं० ॥ वहु सुतारा नारिके, ते पणठे किहां रे के ॥ ते० ॥ ए बेठो मुज पूठके, निरखो मात

जी रे के ॥नि०॥ पटराणी ततकालके, मनमां उ
लजी रे के ॥म०॥ ४ ॥ राज रुद्धि सब छोडिके,
वनमें क्युं रह्या रे के ॥व०॥ उजड वेडि मझारके,
बेसी क्युं रह्या रे के ॥बे०॥ कर्मतणी गति मात
के,मांझीने कही रे के ॥ मां० ॥ रोवा लागी ताम
के, झोसी लहवही रे के ॥ झो० ॥ ५ ॥ दुःख
मकरजो पुत्रके, सहु थाशे जलो रे के ॥ स० ॥
जोगवसो कृत कर्मके, हलीयले केटलो रे के
॥ ह० ॥ रोवे क्युं रोहितासके, बेटो जूखीयो रे
के ॥ बे० ॥ मोदक जरीयो माटके, आगल मू
कीयो रे के ॥ आ० ॥ ६ ॥ बालक ते सुकमाल
के, गाढो रंजीयो रे के ॥ गा० ॥ देवी थइ अंत
रिक्षके, दुःख तस जंजीयो रे के ॥ दु० ॥ त्रीजी
ढाल रसालके, कनकसुंदर कहे रे के ॥ क० ॥
सांजली चतुर सुजाणके,मनमे गहगहे रे के॥७॥

॥ दोहा ॥

॥ सानिध्य सासन देवता, एम कीधि इणिवार ॥
राजा राणी चालिया, तिहां थकी तिणिवार॥१॥

दिन दश मारग चालतां, आयो नगर उदार ॥
कासी नामे परगडो, नव जोयण विस्तार ॥ २ ॥
सुंदर मंदिर मालियां, एक थंना आवास ॥ देह
रामां हरिचंद गयो, रयणि निद्रा निवास ॥ ३ ॥
पंथीडा देवल शरण, के सरवरकी पाल ॥ पंथी
होवे दयामणा, जिम जिम पडे वयाल ॥ ४ ॥
राजा राणी रंगभरे, सुतां मंडप मांहि ॥ झबकें
राजा जागीयो, डुःख सल्यो मनमांहि ॥ ५ ॥
डुःखको पालण दे सखी, जो निश्वास न हुंत ॥
हीयडो वेडि तलाव ज्युं, फुटि दह दिशि जंत
॥६॥ निःपुरातन गेहिनी, सो किम नावत रात ॥
चित्त नवल धन देखीने, झांखि फिरफिर जात
॥ ७ ॥ निंद न घडी एक नीपजे, कहीस मन
कवणाह ॥ अधिक सनेही बहु रुणी, वयर खटु
कत ज्यांह ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग केदारो गोडी ॥ काम
णी काया वीनवेरेहां ॥ ए देशी ॥

॥ हवे राजा डुःख सालियो रेहां, रोवा लागो

जाम ॥ मेरेजीउरा ॥ हिवे मोकुं किस्या जीवणा
रे हां,कर्म कमाया काम ॥ १ ॥ मे० ॥ सत्य गयो
तब क्या रह्यो रे हां, प्राणगयां परमाण ॥ मे०॥
सत्य नचूकुं आपणो रेहां, तो जीव्युं डुनियांन
॥ २ ॥ मे० ॥ अवधि करी एक मासनी रेहां,
पख वोलायो एक ॥ मे० ॥ लाख मोहर किम
संपजे रेहां, टलती देखुं टेक ॥ ३ ॥ मे० ॥ न
री आवे छातीनरी रेहां, लेतो श्वास प्रकास ॥
मे० ॥ बहु डुःखे पूरयो नृपति रेहां, नयणे पा
वस मास ॥ ४ ॥ मे० ॥ धूजे नृप धरणी ढले
रेहां, खिण खिण होत अचेत ॥ मे० ॥ सीतल
वाय ऊकोलती रेहां, सुंदरि करत सचेत ॥ ५ ॥
मे० ॥ नारि सुतारा लोचनी रेहां, आंसु लूहे
चीर ॥ मे० ॥ कांइ ऊरो वालमा रेहां, साहि
ब साहस धीर ॥ ६ ॥ मे० ॥ सुण प्रीतम
प्राणेसरू रेहां, अरज हमारी एक ॥ मे० ॥
मुज वेची दमडा लेरा रेहां, उनी राखो टेक
॥ ७ ॥ मे० ॥ सत्यराखो पीयु आपणो रेहां,

साहिब सत्य न गमाय ॥ मे० ॥ सत्य राख्यां स
बहीं रहे रेहां, सत्य गयां सब जाय ॥ ८ ॥मे० ॥
इणि वाते लज्जा नही रेहां, में प्रभु तोरी दास
॥ मे० ॥ चिंता सब दूरे हरो रेहां, वालिम चित्त
विमास ॥ ९ ॥ मे० ॥ नीर भरुं लज्जा नही रे
हां, रांधण इंधण काम ॥ मे० ॥ वासीदो पण
हुं करुं रेहां, शील न खंडु स्वामि ॥ १० ॥मे०॥
तो जायी चंद्रसेनकी रेहां, जो राखुं व्रत शील
॥ मे० ॥ जे में कर तेरो ग्रह्यो रेहां, एहिज टेक
अहील ॥ मे० ॥ ११ ॥ करवत वूही अंगमें रे
हां, वचन सुणी हरिचंद ॥ मे० ॥ ओर उपाय
कबु नही रेहां, आवी पड्यां दुःख दंद ॥ १२ ॥
मे० ॥ सत्य सुतारा तें कह्यो रेहां, वचन होवें
एसत्य ॥ मे० ॥ शुभ अशुभ नवि जाणीए रेहां,
दैवकरे सो सत्य ॥ १३ ॥ मे० ॥ क्षण मांहें प
रगट थयो रेहां, झाल्लरनो झणकार ॥ मे० ॥
वाग्या तिहां तिण देहरे रेहां, सूरज उगणहार
॥ १४ ॥ मे० ॥ चोथी ढाल कही इसी रेहां,

बहुत कीया अन्याय ॥ मे० ॥ ऐसा दुःख हरि चंदका रेहां, क्युं करी कहणा जाय ॥ १५ ॥ मे० ॥ सुखीयातो माने नहीं रेहां, कनक सुंदर कहे जोय ॥ मे० ॥ सोई सत्य करी मानसे रेहां, जिसने वीती होय ॥ १६ ॥ मे० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारि वचन प्रमाण करि, नृप उठ्यो परभात॥ पोहतो मारग मांझवी, करम तणे अवदात ॥ १ ॥ सुंदरि शिर मुकी तृणो, इम दाखे तिण वार ॥ ल्यो कोई उत्तम पुरुष, वेचुं माहरी नारि ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ पांचमी रागधन्याश्री ॥ नोलीडा हंसारे विषय नराचीयें ॥ ए देशी

॥ तव एक ब्राह्मण आयो तिण समे, पूछे नृपने रे सोय ॥ मोल सुणावोरे मुजने नारिनो, लाख मोहर एक होय ॥ १ ॥ नारी वेचेरे हरि चंद आपणी, सहस इग्यारेरे दाम ॥ एआंकणी ॥ सहो सूधेरे देसुं एहना, जोडे ताहरे काम ॥ ॥ ना० ॥ २ ॥ राये मान्या दीधा वेगसुं, लेइ

चाल्यो वर नार ॥ तब राजा धसके धरणी ढल्यो, मृतक तणे अनुहार ॥ ३ ॥ तव पटराणी गाढी गाबरी, आघो पग न जराय ॥ पाछी परवस आवी शके नही, वयण न कहेणोरे जाय ॥ ४॥ ना० ॥ प्रीतम सामोरे जोवे पदमणी, बेटो आवेरें लार ॥ ठेडे विलग्योरें रढमांहि रह्यो, सुण माता सुविचार ॥ ५ ॥ ना० ॥ साथे ते डोरे मुझने मातजी, न रहुं राजा पास ॥ व लि देवरावोरे दाम ते माहरा, कहे कुमर रो हितास ॥ ६ ॥ ना० ॥ दश मस वाडा उदरें तें धर्यो, दोहिला गर्भावास ॥ वरस दसां लगे सारें ताहरे, के सारे सुर वास ॥ ७ ॥ ना० ॥ पाछा आवो फिरि एक वारसुं, ब्राह्मण वेद भंडार ॥ तातजणी समझावि द्यो तुमे, दश ह जार दिनार ॥ ८ ॥ ना० ॥ ब्राह्मणने मन करु णा उपनी, फिर आयो तत्काल ॥ सुंदर आवी तारालोचनी, मूर्छागत भूपाल ॥ ॥ ९ ना० ॥ राजा छांट्यो ताढा नीरसुं, विंझणे वींझे वाय ॥ ह

रिचंद राजा उति वेगे थयो, धणविण रह्यो विलाय ॥ १० ॥ ना० ॥ जोवा लाग्यो नारि निजर नरी, रोवा लाग्यो ताम ॥ कहेवा लागी तारालोचनी, सुण पीयु आतमराम ॥ ११ ॥ ना० ॥ धीर धरो पीयु डा साहस धरो, नकरो विरह विलाप ॥ लिखियो विधाता लगी रातनो, सुख डुःख सहसो आप ॥ ॥ १२ ॥ ना० ॥ सांजल कंता को केहनो नहीं, ए संसार असार ॥ नाम संजारो श्रीजगवंतनो, जवो दधि तारण हार ॥ १३ ॥ ना० ॥ जिम सरज्यो ते तिम प्रजु थायसी, सुख डुःख राज जंमार ॥ लिख्यो लेख शिर कुण टालि सके, जे सरज्यो किरतार ॥ ॥ १४ ॥ ना० ॥ ढाल वैरागनी कही ए पांचमी, राणी आपे धीर ॥ राग धन्या श्री कनकसुंदर कहे, राजा साहस धीर ॥ १५ ॥ ना० ॥

॥ दोहा ॥

॥ बेटो मातने वीनवे, हुं आवीस तुम साथ ॥ वली देवरावो दश सहस्स, मोहर पीताने हाथ ॥ १ ॥ वचन सुणी बालक तणां, कुरुणा मनमे आण ॥

बाल वीछोहो मातने, हुं किम करुं सुजाण ॥३॥

॥ ढाल छठी ॥ रागसारंग मल्हार॥

देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे ते ब्राह्मण वीनवे रे, इणिपरे वचन विचार ॥ ले हुं देउं तुझने रे, दश सहस दीनार ॥ ॥ १ ॥ हैहै गति हरिचंद नी रे, कर्मविटंबण हार ॥ है० ॥ एआंकणी ॥ वेच्यो पुत्र महिपति रे, रमझमतो रोहितास ॥ पटराणी जोती रही रे, वालम लील विलास ॥ २ ॥ है० ॥ चाल्यो बाम्हण चुंपसुं रे, चाल्यो राज कुमार ॥ चाली तारालोचनी रे, राजाको जीव लार ॥ ३ ॥ है० ॥ हीयो न फूटे वज्रनो रे, आज न त्रूटे कांय ॥ प्राण न त्रूटे पापीयो रे, मुझ तन मन ले जाय ॥ ४ ॥ है०॥ यतः॥ मुझ हीयडो अतिहे निठुर, प्यारी तणे विछोह ॥ फाटी शत खंड होवतो, तो हुं जाणत मोह ॥ १ ॥ पाणी तणा प्रवाह, आंखे दीसे आवता ॥ जाणत हेज हीयाह, लोही आवत लोयणे ॥३॥ ढालपूर्वली ॥ दीशे फिरि

फिरि देखती रे,जाती रोतीनार ॥ रोते रोयां पं खीयां रे, सगलाही तिण वार ॥ ५ ॥ है० ॥ हो वालिमजी कंतजी रे,हा हा प्राण आधार ॥ कब मुख पेखीस प्रीतमां रे,मन मोहन नरतार॥ ॥ ६ ॥ है० ॥ वनिता पोहोती वेगली रे, आडी आवी भींत ॥ धसकेसुं धरणी ढल्यो रे, राय थयो चलचित्त ॥ ७ ॥ है० ॥ लांबी बाह पसा रीने रे, मूकण लाग्यो धाह ॥ प्रीया प्रीया मुख उच्चरे रे, विलवंतो नरनाह ॥ ८ ॥ है० ॥ केमें इंडां फोडीयां रे, सरोवर नांजी पाल ॥ के तरु कुंपल तोडीयां रे, तोडी नीली माल ॥ ए ॥ ॥ है० ॥ राखी थापण पारकी रे, दीधां कूडा क लंक ॥ माडीसुं पुत्र विछोहीयां रे, के में कीधा वियोग ॥ १० ॥ है० ॥ के परनारि अपहरी रे, के कीधी परतांत ॥ के हुं दुष्ट पापीयो रे, जीम्यो आधी रात ॥ ११ ॥ है० ॥ के में ब्राह्मण मारी या रे, के में मारी गाय ॥ के में साधु संतापी या रे, के में दीधी लाय ॥ १२ ॥ है० ॥ के में

व्रतभइ कापीया रे, के मारी जूं लीख ॥ के कूडां व्रतमें कीयां रे, के में भांजी दीख ॥ १३ ॥हे०॥ के सुत शोक तणा हण्या रे, के में लीधी लांच॥ के खट दरशण पोखीआं रे,पर मारग मांहिं राच॥ ॥ १४ ॥ हे० ॥ के पासीगर हुं थयो रे, के में पाडी वाट ॥ के में गुरु जन लोपीया रे,के पाड्या घर हाट ॥ १५ ॥ हे० ॥ के में साप विणासी या रे, बिह्नमें रेड्यो नीर ॥ झाढ बंधावी जीव नी रे, ते सहु सहे शरीर ॥ १६ ॥ हे० ॥ पाप अघोर कीया इस्या रे, केहेतां न आवे छेह ॥ आज उदय आव्या तिके रे, भोगवे प्राणी तेह॥ ॥१७॥ धिग् कमाइ माह्ररी रे, धिग् जीव्यो मुक आज ॥ नारि विना बेटा विना रे, जीव्यां केही काज ॥ १८ ॥ हे० ॥ कुण जाणे थासे किस्युं रे, आपद संपद होय ॥ कृत्य कमाइ आपणी रे, होणहार ते होय ॥ १९ ॥ हे० ॥ छठी ढाल पूरी थइ रे, कनकसुंदर मुनिराय ॥ विवरी सु ६ वखाणतां रे, हीअडे गर्व नथाय ॥२०॥हे०॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि वाजे विरह लहरी, वलि वलि करे विलाप ॥ मनजाणे जइने मलुं, घणु पछतावे आप ॥ १ ॥ बहु गुणवंति गोरडी, चंद वदन कटि खीण ॥ आशालुब्धी साहीधणी, मेंवेंची मति हीण ॥ २ ॥ रे मन दूष्ट दूरात्मा, पापी क्रूर कठोर ॥ तूं किम उडी नां गयो, करी अबलासुं जोर ॥ ३ ॥ हा हवे हुं जाउं किहां, केहसुं करूं आलोच ॥ म्हारे हजी थाके घणी, सबल पड्यो एम सोच ॥ ४ ॥ वेंची तारा लोचनी, वेच्यो राजकुमार ॥ वेच्यां मंदिर मालीयां, राज रूधि भंमार ॥ ५ ॥ हजीय दंभ आगें लग्यो, करीयें कवण उपाय ॥ के अकर्म करणी करुं, के मुज वांचा जाय ॥ ६ ॥ इम चिंतवतां चित्तमें, सूर गयो पर तीर ॥ श्रीहरिचंद महिपति, उठ्यो साहस धीर॥ ॥७॥ दिन फूरंतां निगम्यो, रयणी रोयंति विहाय ॥ सज्जन पाखे जीववो, ते जीव्यो स्योमाय ॥ ८ ॥ किण मंदिर सूतो जइ, आशा लुब्ध निराश ॥

खिण जागे खिण विलवले,खिण नांखे निश्वास॥
॥ ए ॥ चंदें कीधो चांदणो, राय थयो चलचित्त॥
मधुरस्वरे मन दुःखभरें, गावे विरही गीत ॥१०॥
दिवसे तूटित तारका, ज्योती जागि असमान ॥
विरही जनके कारणें, चंद चलावत वाण ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ सातमी राग सारंग मल्हार ॥ इणे
अवसर तिहां मूबनोरे ॥ एदेशी ॥

॥ सुण ससीहर एक वीनती रे लाल, तुजनें
कहुं करजोडि रे ॥ चंदलीया ॥ में वेंची वर वा
लही रे लाल, लागी सबली खोडि रे ॥ १ ॥
॥ चं० ॥ कहेने संदेसो मोरी नारिन रे लाल, तुं
मुज प्राण आधार रे ॥ चं० ॥ क० ॥ तुं सहुने
देखे सही रेलाल, तुजने देखे संसार रे ॥ २ ॥
॥ चं० ॥ क० ॥ हुं सबलो पापी हूउ रे लाल,
कीधी घात विश्वास रे ॥ चं० ॥ पुत्र सहित हाथ
पारके रे लाल, वेंची वेंची नारि निरास रे ॥ ३ ॥
॥ चं० ॥ सुंदरि सुरंगी माहरी रे लाल,माहरी जी
वन जीव रे ॥ चं० ॥ रोतां कुण मुज राखसे रे

लाल, केही केही कीजे रीव रे ॥ ४ ॥ चं० ॥ वा
लही विरंगी रंगी में तजी रे लाल,मन विलखाणी
नारी रे ॥ चं० ॥ समय प्रमाण कीयो सती रे
लाल, बहु दुःख हीया मकार रे ॥ ५ ॥ चं० ॥
पति नक्ति मोहोटी सती रे लाल, शीलवती मन
शुद्ध रे ॥ चं० ॥ हरिणाक्षी पर हव हुइ रे लाल,
मोहन वेलि मन शुद्ध रे ॥ ६ ॥ चं० ॥ उर नि
शासा मूकती रे लाल, हियडे विरह प्रकाश रे ॥
॥ चं० ॥ बहु दुःखे नूपति पूरियो रे लाल, नयणे
पावस मास रे ॥ ७ ॥ चं० ॥ ग्रथिल पणे गीत
गावतो रेलाल, करता निर्झरणा नीर रे ॥ चं०॥
चंद्र प्रते संदेसडो रे लाल, दाखे दाखे दुःख अ
पार रे ॥८॥चं०॥ चंदे मानी वीनती रे लाल,जइने
कह्यो हित जाणि रे ॥ चं० ॥ आंख फरुकणने
अंतरे रे लाल, पाछा दीधा आणि रे ॥ ए ॥चं०॥
सुण राजा कहे चंद्रमा रे लाल, संदेसा सुविचार
रे ॥ चं० ॥ पटराणीयें तुजने कह्या रे लाल, रोति
रोति अबला नार रे ॥ १० ॥ चं० ॥ सुंदरि सं

देसा मोकले रे लाल, प्रीतम प्राण आधार रे ॥
॥ चं० ॥ माहरे मन पोयु तुं वश्यो रे लाल,जिम
चातुक जलधार रे ॥ ११ ॥ चं०॥ सुं० ॥ ब्राह्मण
मुजने लेइ चल्यो रे लाल, नीत तणे अंतराल रे
॥ चं० ॥ धसकेसुं धरणी ढलि रे लाल, मुर्छांणी
तत्काल रे ॥१२॥ चं० ॥ सुं० ॥ विधुर मन थयो
माहरो रे लाल, कंतडो नदीसे केथ रे ॥ चं० ॥
नीर छांटी चित्त वालियो रे लाल,तलि बेठी थइ ते
थ रे ॥ १३ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ वलि चित्त चेत्तन
आवियो रे लाल, हा मुज वेंची नाथ रे ॥ चं०॥
विरहे विलाप करे इस्या रे लाल, आवी बीजाने
हाथ रे ॥ १४ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ ब्राह्मण घरे पो
हती सति रे लाल, रहती शील अखंड रे ॥चं०॥
तुजने एम कहावीयो रे लाल, पीउ दुःख मकर
प्रचंड रे ॥ १५ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ साहसधीर प्रा
णांतमे रे लाल, बंधन बांध्यो ज्युं कोय रे ॥चं०॥
लाख महोर विधें पूरजो रेलाल,जिम मन निर्भय
होय रे ॥ १६ ॥ चं० ॥ सुं० ॥ ढाल सुरंगी सा

तमी रे लाल, गाथा शोले एह रे ॥ चं० ॥ कनकसुंदर कहे सांभलो रेलाल, हवे आगल थयो जेह रे ॥ १७ ॥ चं० ॥ सुं० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा हरिचंद साहसी, उठ्यो थयो प्रभात॥ राणी तारालोचनी, भलि कही ए वात ॥ १ ॥ सोंपी सागर सेठने, महोर सहस एकवीश ॥ राजा रण मांहें गयो, नदि तीर अवनीस ॥ २ ॥ बेठो तरुवर वासतले, छोड्यो मूल सरूप ॥ अंग वि लेपण धूलनो, निकूक रूप सरूप ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ आठमी राग केदारो गोडी ॥ कु

मरी जाणुं कारज सीधुं ॥ एदेशी ॥

॥ एक चंडाल तिहां आयो, राजा हरिचंदे बो लायो ॥ करी लंगोटी करमें लाठी, बोले वचन वाणी पण काठी ॥ १ ॥ काल रूप कोपें कलकलतो, गालि देतो बलतो उछलतो ॥ धर्म तणी मति कीधी पाठी, जाल ग्रहिनें आणी माछी ॥ २ ॥

दूहव्यो राणो जिम तडके, लघु बालक देखिने नडके ॥ माखी दीले करे गुंजार, कूतरा चितरा आवे लार ॥ ३ ॥ पाप करेजे अति असुहातां, उढण वस्त्र रूधीरें रातां ॥ अति डुरगंध उछाले अंबर, दीठो श्रीहरिचंद नरेसर ॥ ४ ॥ कहे चंमाल सांजल हुं नाखुं, रही सकेतो तुंने हुं राखुं ॥ मृतक तणा खांपण नित ग्रहणा, आधी रात म साणमें रहणा ॥ ५ ॥ मुज घरका नित वहणा पाणी, रहेगा तो रहो इम जाणी ॥ मानी वात घरे लेइ आयो, उत्पति चोथो नाग लिखायो ॥ ॥ ६ ॥ काज अकाज करे जगजाणे, घर चंमाल तणे जल आणे ॥ राते मसाण सदा रखवाले, आपणो सत्य किमे नवि टाले ॥७॥ कोरा अन्न तणो आहार, स्नान करिने जिमे एक वार ॥ कु ल रीत किमे नवि मूके, सत्य शील साहस नवि चूके ॥ ८ ॥ आराधे नगवंत वीतराग, मनमांहें राखे वैराग ॥ ए संसार असार अपार, डुःख अ नेक तणो नंमार ॥ ए ॥ कर्म प्रमाणे सुर नर

खूटद्या, कर्म अग्निथी कोइ न तूटद्या ॥ कर्में राम पांमव वन वासी, कर्में सुरपति कष्ट प्रकासी ॥ ॥ १० ॥ कर्में कुबेरदत्ते मात विलसी, हरिचंद नगर विकाणो काशी ॥ कर्में रावणें सीतापहारी, कर्में मास्थो जाइ मोरारी ॥ ११ ॥ कर्में कौरवनो कुल खोयो, कर्म प्रमाणे समुद्र विलोयो ॥ कर्म प्रमाणे रिसह जिणंद, पारणो न लह्यो जगदा नंद ॥ १२ पार्श्वनाथने उपसर्ग कीधां, कर्म प्र माणे कमठें दुःखदीधां ॥ कर्में स्वामि श्रीवर्द्ध मान, बिहुं उदरे आया उधान ॥ १३ ॥ एहवो कर्म तणो परिमाण, कर्म प्रते नवि चाले प्राणि ॥ चंद सूरज नमता न विलंबे, वलि म्लेछ जे राहु विटंबे ॥ १४ ॥ एह आठमी ढाल सुणाइ, कर्म तणी गति देखो जाइ ॥ मत करसो मनमांहि व डाइ, क्षण एक आपणी होय पराइ ॥ १५ ॥ च उदे चोकडी रावणे हारी, राजा मुंज थयो जी खारी ॥ छोडी गयो रणमे नल नारी, कनकसुं दर कहे वात विचारी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काल दंम चंमाल घरे, रहतो इणिपरे राय॥ कार्य अकार्य सहुकरे, हरियो नाम कहाय ॥१॥ कर्म कमाइ जोगवे, शुज अशुज फल जीव ॥ जेह न आवे पापनो, त्यां लगि डुःख सदीव ॥ २ ॥ मन मूरख मम मुंफतुं, नमिटे सुख डुःख लीह॥ विण सरज्या मेलो नही, ज्यांलगि वांका दीह ॥ ॥ ३ ॥ मन संवर करि धीर धर, मकर मिल णारी माम ॥ कुण जाणे कबहि वसे, उजड खेडा गाम ॥ ४ ॥ रे मन म करे उरतो, देखी परायो राज ॥ तड फड मरेसी सीहज्युं, सुणि श्राव णकी गाज ॥ ५ ॥ आशा विलुध्धा माणसा, क दिही मिलणो होय ॥ कादव पाणी वरजीशुं, जे उर फटणो न होय ॥ ६ ॥ आशा संपें अखय धन, उपगारी जीवंत ॥ पंथि चले देशावरे, व रखां सफल फलंत ॥७॥गाहा॥ नवरस विलास समये, कंवं गहिउंण मुक्क निस्सासं ॥ सारयणी सो दीहो, तंडुःखं सल्लये हीयए ॥ ८ ॥ श्लोक॥

विधिनांच कृतंश्रेष्ठं, यं निस्वासं विनिर्मिता ॥ ग्र६
दुःखं समंयेन, गृह्णीयां छिरही जने ॥ए॥दोहा॥
विरहीजन सहुको मिले, आशाने आधार ॥ मि
लण दुहली वह्नही, स्वहस्तें वेंची नारि ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ नवमी रागमारु ॥ प्रीत लागीहो
कान्हा प्रीत लागीहो ॥ एदेशी ॥

॥ मिलण दुहेलो हो, वालहि मिलण दोहेलो
हो ॥ मिलण दोहिलो माननी, नहीं ताने सोहेलो
हो ॥ १ ॥ वालहि० ॥ एकदिन मोकुं सोहना, वर
सेज विछाया हो ॥ रंग रमणी गय गामिनी, उरसुं
उर लाया हो ॥ २ ॥ वा० ॥ एकदिन आज
इस्या नया, सुतां समसाणे हो ॥ सेज विछाया
झालका, मध्यराति मसाणे हो ॥ ३ ॥ वा० ॥
एकदिन मोकुं सोहता, दीवान जुडंता हो ॥ ग
यंद पट्टाधर घूमता, आगें मह्न लडंता हो ॥ ४ ॥
॥ वा० ॥ एकदिन आज इसा बन्या, वरते नर्य
कारि हो ॥ नूतलडे रौद्रामणा, व्यंतरद्वे कारी

हो ॥ ५ ॥ वा० ॥ एकदिन मोकुं सोहता, सिर छत्र धरंता हो ॥ सूरसुभट आगे खडां, कर जोडी रहंता हो ॥ ६ ॥ वा० ॥ एकदिन आज इस्या भया, शिर धूणंता हो ॥ आगे मृतक छिद्रा मणा, पहिरा ते दीयंता हो ॥ ७ ॥ वा० ॥ एक दिन मोकुं सोहता, नीसाण धुरंता हो ॥ चिहुं दिशे चंड मनोहरु, वर चमर ढलंता हो ॥ ८ ॥ ॥ वा० ॥ एकदिन आज इस्या बण्या, भूति का झुलि वाजे हो ॥ जे किरतार स्वयं करे, ते स गलो छाजे हो ॥ ए ॥ वा० ॥ सुख दुःख स हीए आपणा, अनेरासुं न कीजे हो ॥ दे परमे श्वर सींगतो, ते सींग सहीजे हो ॥ १० ॥ वा० ॥ ढाल कही नवमी भली, मारुणी रागें हो ॥ क नकसुंदर मुनिश्वरे, ए विरचि वैरागें हो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम विरहातुर भूपति, रहतो एहवी भां ति ॥ एकवार मलवा तणी, पटराणीसुं खांति॥ ॥ १ ॥ परघर जाइ शके नही, राणी नसके

आय ॥ मनह मनोरथ उपजे, मनही मांहिं स
माय ॥ २ ॥ मनकी आस्या पुगसी, मिलसि ना
रि संयोग ॥ दिनवलियां वलसे सहु, टलसे विरह
वियोग ॥ ३ ॥ गाहा ॥ आसा नदेइ मरणं,
विणा मुयेणन लप्नये पेमं ॥ अवसरजे नमरिजइ,
तोलहाइ सामी सुंदरिहो ॥ ४ ॥ आसा समुद्द प
डियं, चिहुंदिसिचाहंति विम्मला नयणी ॥ हे कोई
समझो, जो बाह विलंबणं देइ ॥ ५ ॥ दोहा ॥
बाह विलंबण जे दीए, सहुथी ते समरथ ॥ र
यणायर बुडंतडा, कवण पसारे हथ ॥ ६ ॥
धन सो दिन वेला घडी, सुंदरि मुख सुविहाण॥
निरखिस तारा लोचनी, जीवत जन्म प्रमाण ॥
॥ ७ ॥ आशा अमरी अनेक युग, मरिमरि गये
ज्युं लाख ॥ पुष्प मरे परिमल रहे, लोक नरे
ए साख ॥ ८ ॥ हवे सुणज्यो राणीतणो, एक
मनां अधिकार ॥ ब्राह्मण घर जिणि परे रहे, ते
विरतांत विचार ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ दशमी राग वसंत ॥ सुमति जिणंद जूहारीयें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे राणी ब्राह्मण घरें, रहेति दुःख अपारो जी ॥ श्रीपरमेश्वर ध्यावती, समरंति नवकारोजी ॥ १ ॥ शील सुरंगी चूनडी, सोहे तन सिणगारो जी ॥ टीका कज्जल परिहस्या, सरस तज्यो आहारो जी ॥ २॥ हार तज्यो कायातणो, मेखलनो फमकारो जी ॥ नवो कंचुक पण परिहस्यो, ज्यां नमिले नरतारो जी ॥ ३ ॥ शी० ॥ गेडथा नेउर वाजणा, कर कंकण न सुहायो जी॥ तिलक तज्यो वली वहिरखो, फुलडी कंठ रहायोजी ॥ ॥ ४ ॥ शी० ॥ स्नान मज्जन नूखण तज्यां, कुंमल युगल कपोलो जी ॥ राख्यां मंगलिक कारणे, चीर तज्यां रंगरोलो जी ॥ ५ ॥ शी० ॥ काथो पान सोपरडी, पीउ विण रंग न लागे जी ॥ मेंदी कुंकु कमकमा, अंगे अग्नि ज्युं लागे जी ॥ ॥६॥ शी० ॥ दर्पण दर्शन मुख तणो, राहु ग्रहे मुख चंदोजी ॥ चंद किरण चंदनविना दावानल

दुःख दंदोजी ॥ ७ ॥ शी० ॥ टीकी काजल रा खडी, गोहीरा जिम गाढे जी ॥ परड पाइल पग वींछीया, मेखलडी कडि वाढेजी ॥ ८ ॥ शी० ॥ विरहे व्याकुल विरहणी, विरह वसंत रुत व्यापेजी ॥ काया कापडा दरजी ज्युं, कातरणी तन कापे जी ॥ ए ॥ शी० ॥ फूल्या मरवा मोगरा, केसु चंपक फूल्यो जी ॥ जाणी दावानल जिस्यो, ज्वालानलनी फुल्योजी ॥ १० ॥ शी० ॥ देखी सरोवर जल जर्यो, लेतो लहर हलूरोजी ॥ काल भुजंगम फणफटी, मूके फूक फमूरोजी ॥ ११ ॥ ॥ शी० ॥ प्राण पीयारे कंतविना, सवि सुख तन न सुहायोजी ॥ कोकिल मोर पपीयडा, डुसमन ज्युं डुखदायोजी ॥१२॥ शी० ॥ उदासीन राणी रहे, छूटे वेणी दंभोजी ॥ जोगिण ज्युं पीउपीउ जपे, पाले शील अखंभोजी ॥ १३ ॥ शी० ॥ छठ अठम मास खमण करे, घृत विख जेम विकारोजी ॥ अरिहंतदेव आराधति, ध्यानधरे नवकारो जी ॥ १४ ॥ शी० ॥ रूप अनुपम सती

तणो, सूरज ज्योति प्रकासो जी ॥ एकदिन ब्रा ह्मण वीनवे, वचन सुणो सुविलासो जी ॥१५॥ ॥ शी० ॥ विप्र जणे सुण सुंदरि, परिहर अंग उदासो जी ॥ मुज सेंती सुख जोगवो, नवरस जोग विलासो जी ॥ १६ ॥ शी० ॥ दासी किम तुजने करुं,तु मोह्टोटाघरनी नारि जी॥तुं पटराणी माह्रे, जोगव जोग अपारजी ॥ १७ ॥ शी० ॥ सोवन खाट हिंमोलडे, केलि करो मनरंगोजी ॥ मनवंछित जोजन करो, अंगधरो उछरंगोजी ॥ ॥ १८ ॥ शी० ॥ हार मोर मन मानतो, साडी चीर सिणगारोजी ॥ हुं तुज आपुं करी मया, आ जरण अधिक उदारोजी ॥ १९ ॥ शी० ॥ रत्न कनक मणि मुड्डी, कोडी सवानो हारोजी ॥ तुजने सोहे सुंदरी, हुं तुज शिर जरतारो जी ॥ ॥ २० ॥ शी० ॥ तुं मुह मांगे जेतलि, आपु दासी अनंत जी ॥ तपकरी काया कां दमो, जांजो मननी भ्रांतोजी ॥ २१ ॥ शी० ॥ जाणे पावक घृत तणो, नाम्यो वचन विचारो जी॥ लागी आग

शरीरमें, शील नखंमूं सारोजी ॥ १२ ॥ शी० ॥
कुवचन ब्राह्मण दुष्टनां, राणी मन न सुहायांजी॥
दशमी ढाल वसंतनी, कनकसुंदर गुणगायाजी॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन इस्या राणी प्रते, बोल्यो विप्र विपुण्य॥
दाधा उपर फोफडो, जाणे भेल्यो लूण ॥ १ ॥
राजाने राणी तणा, कर्मतणी गति जोय ॥ एक
एक हुंति अधिक, दुःख मांहें दुःख होय ॥ २ ॥
कुवचन ब्राह्मण दुष्टनां, सुणि दव लागो शरीर॥
शीयलसुं दृढमन सुंदरी, कहे सुणो वड वीर ॥

॥ ढाल ॥ इग्यारमी रागवैराडी ॥
जलालियानी ॥ देशी ॥

॥ वचन सुणी ब्राह्मण तणारे, कहेवा लागी
एम ॥वीरा ब्राह्मण॥ चतुर माणस तुमे एहवा रे,
कथन कहीजे केम ॥ १ ॥ वी० ॥ ए आंकणी॥
शील नखंडु काया खंमसुंरे, पडीरे पटोले गांठ ॥
॥ वी० ॥ लोहे लीह पडी जिसीरे, परबति राय
परांठ ॥ २ ॥ वी० ॥ शील सबल हीरा जिसोरे,

नांज्यो नलाजे तेह॥वी०॥ सूरज पलटे जगतोरे, नियम न पलटे एह ॥ ३ ॥ वी० ॥ शी० ॥ सोने श्याम लागे नहीरे, रयण न झांखो होय ॥ ॥ वी० ॥ विषधर चंदन वींटीयोरे, वासन मूके तोय ॥ ४ ॥ वी० ॥ शी० ॥ रांधण इंधण हुं करूंरे, कहोतो आणुं नीर ॥ वी० ॥ कहोतो वासीदो करुं आंगणेरे, व्रत न खंडुं मोरा वीर ॥ ॥ ५ ॥ वी० ॥ शी० ॥ एहवारे वचन उचारती रे, कां न पड्यो आकाश ॥ वी०॥ का न मुइ तत्काल हूंरे, न हुओ प्राण विणास ॥ ६ ॥ वी० ॥ ॥ शी० ॥ तुं मुज बंधव धर्मनोरे, तुं मुज पिताने ठाम ॥ वी० ॥ जो तुं भलो चाहे आपणु रे, एहवो मत दाखे नाम ॥ ७ ॥ वी० ॥ शी० ॥ ए धिकू करणी ताहरीरे, ए धिक् तुझ आचार ॥ ॥ वी० ॥ वारु त्रिवाडी ताहरो माहाजनोरे, षट कर्म तुजधिःक्कार ॥८॥ वी०॥शी० ॥ जो तुं करीस हठ एहनो रे, तो मरसुं एकताल ॥वी०॥ सांभली वचन सतीतणां रे, विप्र शिर पडी वज्रता

ल ॥९॥ वी०॥शी०॥ वलतोरे विप्र बोल्यो नही रे, लाज्यो हृदय मझार ॥वी०॥ धन धन तारा लोचनी रे, शील राख्यो एणी वार ॥१०॥वी०॥ ढाल रसाल इग्यारमी रे, वैराडी ए राग ॥वी०॥ कनकसुंदर महिमा शीलनोरे, प्रगटजो जग सो भाग ॥ ११ ॥ वी० ॥ शी० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलतो ब्राह्मण वीनवे, बेहेनी सुणो मुजवा त ॥ राखो शील भली परे, मैं तुज परखी मात॥ ॥ १ ॥ ए सगलो घर ताहरो, हुं तुज बंधव जेम ॥ में वचने करी दूहवी, खमजो करजो खेम ॥ २ ॥ सति हटकथी कंपीयो, मत द्ये मु जने सराप ॥ त्रिविध पणे खमजो वली, लाग्यो मुजनें पाप ॥ ३ ॥ पाप कटे तुज नाम थी, शीलतणे अधिकार ॥ में तुज मानी माउ णी, बहिन तणे अनुहार ॥ ४ ॥ इम अपराध खमावतो, दीगे ब्राह्मण तेह ॥ सति सुतारा लोचनी, धरे धर्मसुं नेह ॥ ५ ॥ सुखे रहे दिन

वोलवे, ध्यान धरें नवकार ॥ दुःक्कर तप करणी करे, शीज अखंमित सार ॥ ६ ॥ हरिचंद राय तिहां रहे, तापस लाग्या लार ॥ पण राजा चूके नही, सत्य सबल अधिकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ राग सोरठ ॥ यतणीनी देशी॥

॥ एक दिवस सुतारा राणी, सहजे मन उलट आणी ॥ वली प्रोहितनी प्रोताणी, गई नरण सरोवर पाणी ॥ १ ॥ पोहोती सरोवर अभिराम, तिहां बाग अछे विसराम ॥ शिव निमित्त चंपकनी पांती, लेवा नर यौवन माती ॥ २ ॥ बागमें वीणवाते आई, हरियो दीयो वेग पगाई ॥ कोइ तोडो रखे वनराइ, कालदंम चंमालरी डुवाइ ॥३॥ चंमाल तणी ए वाडी, देखो जण जाइ उघाडी॥ आवती दीठी पटराणी, हैहै ए जीवन प्राणी ॥ ४ ॥ ठाती नरी डुःख समाणी, रोमंचक आंसु लूहाणी ॥ वलतां मन जाय न वलीयो, टलतां पग जाय न टलीयो ॥ ५ ॥ वरजंतां न जाए वयणे, निरखंता न जाए नयणे ॥

हियडामें हरख नमावे, राणी मन प्रीतम आवे ॥ ६ ॥ वलि वेदन विरहे संतापे, घन नयण घटा जर आपे ॥ वलि प्रोहितणी समझावे, दुःख म कर हिवे किसुं पावे ॥ ७ ॥ धन धर्मी बोले कंता, वालेसर तु गुणवंता ॥ मेलशे दैवतो मिलश्यां, दुःख विरह सहु निकलश्यां ॥ ८ ॥ धन सो दिन संग सुरंगी, मृगा नयणी त्रिया मनरंगी ॥ चंद्र जाण तणे कुलचंगी, लहस्यां सुख वास अनंगी ॥ ए ॥ निठ निठ निहोरे कीधो, दुजी नारी तेलं जो दीधो ॥ राणीने घेर लेई आई, सही सुध कर जे सहराइ ॥ १० ॥ कहे ए निकलो जासे, चंपाल प्रीतमनी पासें ॥ केहने पडी दोष म जो, पेहलेथी जतन करेजो ॥ ११ ॥ एहनो दीठो आज तमासो, एक दुःख अने वली हासो॥ सुं घणो वचनसुं कहीयें, राखीयें तो सोहीरा रहीयें ॥ १२ ॥ बारमी ढाल सोरठ रागे, सुणतां पण मीठी लागे ॥ संपूर्ण खंम कह्यो त्रीजो, राणीने रखे को पतिजो ॥ १३ ॥ जोतां मति

नासी जाए, जाणहार तिके न रहाय ॥ पुत्री करी विप्रे मानी, ते साच वचने वीधाणी ॥१४॥ आश्वास घणो वलि दीधो, राणी मनहार्थे लीधो॥ नावड गछ कमलदिणंद, सुरतरु जेम सुगुरु सुरिंद ॥ १५ ॥ मुनिरत्न नमु उवझाय, जिणे दीधो अंग उपाय ॥ पादांबुज तास पसाय, कहे कनक सुंदर मुनिराय ॥ १६ ॥ इतिश्री हरिचंद तारालोचनी चरित्रे सत्य शीलाधिकारे स्त्री पुत्र विक्रय करण सत्य शील सुदृढ करण नवरस वर्णने चतुरसे वर्णन नाम्नो तृतीय खंड संपूर्ण ॥

॥ अथ चतुर्थ खंड प्रारंभः ॥

॥ ढाल ॥ पहेली चोपाइनी ॥ रागमारू ॥

॥ चोथे खंड प्रणमु ए चार, गुरु गणपति रवि ब्रह्म कुमार ॥ सरस चरित्र कहीस उपगार, श्री हरिचंद तणो अधिकार ॥ १ ॥ हवे अयोध्यो नगरी जिहां, दिव्य रूप तापस छे तिहां ॥ पूरव

वैर रायसुं रोष, दाखे छल बल मनधरि शोष ॥
॥ २ ॥ तोपण सत्यवादी नूपाल, नाम गाम कुल गोपवि काल ॥ अकल अबीह थको अणजीत, सत्त न खंभे राय वदीत ॥३॥ तापस मनमांहि चिंतवे, एक सबल छल करवो हवे ॥ तिणे छले अभग रहेजो एह, तो सत्यवंत नहि संदेह॥४॥
श्लोकः राज्यदत्तं धनंदत्तं, सत्वशीलं नखंभनं ॥ हरिचंद समोत्यागी, न नूतो न नविष्यति ॥५॥
चोपाइ ॥ मुखक नासे देखी मंजार, नकुल देखी नासे विषधार ॥ सिंह देखी मृग नासे जेम, स्वान देखी कुड कंपे तेम ॥ ६ ॥ देखी सीचाणो उडे चडी, तिम एहनो सत्त नरहे घडी ॥ अम रूते अविहड सत्त रहे, तो सुरपति न्यायी गुण कहे॥
॥ ७ ॥ जोसुं एहना सत्यनी वात, वलो खेलसुं बहु परें घात ॥ एम सबल दुःख देवा नणी, दुष्ट बुद्धि कीधी मन तणी ॥ ८ ॥ चोथा खंभनी पहेली ढाल, सुंदर मारू राग रसाल ॥ कनकसुंदर कहे एह वृत्तांत, सत्य न चूके ए सत्तवंत ॥

॥ ढाल ॥ बीजी राग आसावरी सिंधु ॥ वि
षय न राचीए ॥ ए देशी ॥

॥ हवे तापस वली आवियारे, कासी नगर मजार ॥ रूप रच्यो माकण तणोरे, मारे पुरुष अपारो रे ॥१॥ कर्म न छूटीयें, कर्म विटंबण हारो रे ॥ कहो कीजें किस्युं, सुख दुःख होये संसारो रे ॥ कर्म० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ तापस तेहिज पापीया रे, मारे लोक अनंत ॥ हाहाकार हूओ घणो रे, लोक हूआ जयभ्रांतो रे ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ राजा पडह वजडावीयो रे, माकणी जाले जेह ॥ तव निश्चें हुं तेहने रे, मुह माग्यो दुं तेहो रे ॥ ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ ते तापस माकणि विद्या रे, मंत्र तंत्र अछेह ॥ वली आया मंत्रि कन्हे रे, मंत्र वादि हूआ तेहो रे ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ होम अगर मलयागिरि रे, वेगा करवा ध्यान ॥ रायें कह्यो आणो इहां रे, जे जग नोख नवीनो रे ॥ कर्म०॥ ॥ ६ ॥ ऑं ह्रीं क्लॉं क्लुं मंत्रे जपे रे, अछोत्तर सत्त

वार ॥ आमा पडदा बांधीया रे, तिल घृत होम अपारो रे, ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ सति सुतारा लोचनी रे,करी डाकिणनो वेश ॥ हाथ छुरी रुधिरें नरी रे, आणी पास नरेसो रे ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ तेडाव्यो राजा तिहां रे,कालदंड चंडाल ॥ हरियो पण सार्थे अछे रे, दीसंतो विकरालो रे ॥ कर्म० ॥ ए ॥ राय कहे चंडालने रे, मुंडो एहनो शिश ॥ खर चडावी सूली धरो रे, जय जय तुं जगदीशो रे ॥ ॥ कर्म० ॥ १० ॥ कालदंड हरिया प्रते रे, हुकम कीयो अवनित, ए डाकिणने जालीने रे, माथो मुंडि तुरंतो रे ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ एहतो माहारी नारीछे रे, सतीय शिरोमणी सार ॥ पापी पैशुन्य विचें पडी रे, कर्म नडिया निरधारो रे ॥ कर्म० ॥ ॥ १२ ॥ चंद्रनाणनी नंदनी रे, अबला नारी अनाथ ॥ सती तणो शिर मुंडतां रे, किम वहे मा हारा हाथो रे ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ तदपि हरियें मुख हाजणी रे, वचन कीयो परिमाण ॥ काम एह चंडालनुं रे, में करवो निरवाणो रे, ॥कर्म०॥

॥ १४ ॥ बीजी ढाल पूरि कही रे, आशा सिंधु नाख ॥ हीयडो नृपनो कल कले रे, जिम सूरज वैशाखो रे ॥ कर्म० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥इणे अवसर देशांतरी, आयो एक नृप पास॥
करी सु पंखी भेटणो, बोले वचन विकास ॥ १ ॥
एक वचन नृपनुं हुवो, दोय वचन वली धीर ॥
त्रिहुं वचने कारज तणी, ऋण नवी होवे धीर ॥

ढाल त्रीजी राग केदारो गोडी ॥ सुण मोरी सज्जनी रजनी नजावे रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर वात हमारी रे, मुजने सवली आश तुमारी रे ॥ साचो दाखुं वचन विचारी रे, कूड न बोलुं राज डुवारी रे ॥ सु० ॥ १ ॥ जाति हुं ब्राह्मण निरधन डुःखीयो रे, माया विण नर नही सुखीयो रे ॥ माया विण निस्वारथ नारी रे, नीकली जाये स्वछंदा चारी रे ॥ सु०॥२॥ मान न दीये कोइ विण मायारे, पीडे सज्जन कुटुंब सखायारे ॥ सु० महेल न होए गज घो

डारे, पूगे नहीं मनोरथ कोडा रे ॥ सु० ॥ ३ ॥
मायया विण निंद न आवे रे, मृग नयणी पण निं
द निवारेरे ॥ प्रीतम प्राणी विना धन पहिडे रे,
वल्लन पुत्र कलत्र वणु विहडे रे ॥ सु० ॥ ४ ॥
तिण कारण मुज नारि संतापे रे, जइ परदेश ध
न कांइ न ल्यावे रे॥ आलसुआने लखमी किहांथी
रे, विण उद्यमे धन मिलतो नथीरे ॥ सु० ॥ ५ ॥
हाथ पग नांजी जे रहे बेगा रे, ते नर न्यायें जा
णो हेगा रे ॥ वचन पडुत्तर देवा सूरारे, गीत
नाषित पंफित पूरो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ विदेशे जइ
विद्या चालावो रे, देश नलाडे मोहन मलवो
रे ॥ मालवे जइने रहेजे पीयुडा रे, लोक नलाडे
तिहांनां रूडा रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इव्य उपजावी
वहेला आजोरे,घणा नगरनां शालु लाजोरे ॥ वा
टडी तुमारी हरि फरि जोती रे, मुजने आणजो
गजने मोती रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ सुंदर नांतिनुं आ
णजो रूडो रे, चंइ वदनीने योग्यजे चूडो रे ॥
प्राण वल्लन वीनति अवधारो रे, नाकनो वेस ला

वजो न्यारोरे ॥ सु० ॥ ए ॥ अबला माटे बहु धन याची रे, आणसो जाणसुं प्रीतम साची रे ॥ तुम विण साहेब निंद न आवे रे, प्राण पीयारा अन्न नभावेरे ॥ सु० ॥ १० ॥ कांता माता पीता परिवार रे, कंत विछोहो करे वली नाररे ॥ स बल सुख धनथी लहीयेंरे, धनविण पीयुडा बहु डुःख सहियें रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ इम ब्राह्मणीयें मुज प्रति बोध्यो रे, में पण हीयडा मांहें सोध्यो रे ॥ वचन विशेषे नारी समजायो रे, मुज मन मांहे उद्यम आयो रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ तिण कारण हुं घेरथी चाल्यो रे, हलवे हलवे मारग हाल्यो रे ॥ आगें एक महावन आयो रे, नूख लागीने थयो तृषायो रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ गाथा ॥ लवण समो नथी रसो, विन्नाणसमो विधानो नथी ॥ मरण समो नथी नयं, कुधा सम वेयणा नथी ॥ १ ॥ ढालपूर्वली ॥ बारे कोश अटवी नदी गंगा रे, निर्मल नीर लहेर तरंगा रे ॥ स्नान करी निर्मल जल पीधुं रे, पावन तन राजन में कीधुं

रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ कैवच कांटा मांहे विलूध्यो रे, में दीठो सुक पंखी अलूध्यो रे ॥ उडी नसके पांख अलुजाणी रे, लागी जाल जिहां लपटाणी रे ॥ सु०॥१५॥एक वार जो जावुं जीवा रे, इण वन क दीय न आवुं सूवा रे॥भूलो चूको कदेही जो आवुं रे, लटकण फल कदेही न खावुं रे ॥सु०॥१६॥ दोहा ॥ में जाण्यो चंदन बडो, बेठो घाली बाथ ॥ सुखी रुखी सुहि जणो, वली न घालुं बाथ॥१॥ सुरुतरु जाणी सेवियो,भमरो बेठो आय ॥ सुतो तिहां किणे लोभीयो, पांख रही लपटाय ॥२॥ रे केसु मम गर्व कर, मुझ शिर भमर बइठ ॥ माल ति विरहे विखोहियो, पावक जाणी पइठ ॥ ३ ॥ ढाल ॥ यतन करी में तिहांथी लीधो रे, पांख समारी सुसतो कीधो रे ॥ हाथ ग्रहीने पंख स मारी रे, इणीपरे एहनी देह उगारी रे ॥ सु० ॥ ॥ १७ ॥ नीरसुं छांटी प्रफुल्लित कीधो रे, सातु आनो मोदक दीधो रे ॥ दया उपर नही धर्म अनेरो रे, पर जीव सरिखो आप केरो रे ॥सु०

॥ १८ ॥ श्लोक ॥ कृपानदी महातीरे, सर्वेधर्मा तृणांकुर ॥ तस्य शोषमुपैतोयं, किंपुनासिरनिंदति ॥१॥ सर्वे शास्त्रमयिगीता, सर्वे देव मयो हरि ॥ सर्वे तीर्थमयोगंगा, सर्वेधर्मोदयापरा ॥२॥ढाल॥ जीव दयायें कर ग्रही लीधो रे, मारग चाल्यो कारज सीधो रे ॥ जिहां पंखी कहे तिहां मूकुं रे, ए वचन हे गम न चूकुं रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ पंखी बोल्यो अमृत वाणी रे, जीव दान दीयो वड दानी रे ॥ तुजसुं केम उरींगल थाउं रे, पण एक सूधो मर्म बताउं रे ॥ सु० ॥ २० ॥ कासी राजाने नेट करेजे रे, लाख टकानी कांग णी लेजे रे ॥ तिण कारण तुम पासें आव्यो रे, हवे करसो आपणो जाण्यो रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ वली सुक पंखी साख नरेंसी रे, पींगल नरह तर्क नणेसी रे ॥ लीधो पंखी नृप उछरंगे रे, राजा पूछे निज मन रंगे रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ नील वरणे सुक नयणे निरख्यो रे, राजा मनमांहें गाढो हरख्यो रे ॥ तीखी चांच चंचल चतुराइ

रे, अंग सकोमल दल सुख दाइ रे ॥सु०॥२३॥
राता पग नख लोचने रातो रे, घणा पद विशेषें
गातो रे ॥ हसि हसि पंखीने जुए नर राया रे,
कह्यो सुक पंखी वचन सुहाया रे ॥ सु० ॥२४॥
सांभल स्वामी साचो हुं नांखुं रे, जे जे पूछो ते ते
दाखुं रे ॥ पण ब्राह्मणने में देवराव्या रे, लाख
टका द्यो एहने राया रे ॥ सु० ॥ २५ ॥ यतः ॥
सठंप्रतिसठं कुर्यात्, आदरं प्रति आदरं ॥ मया
ते लुचिता पक्षा, न्यायामे मुंकितासिरं ॥ १ ॥
॥ढाल॥ लाख धन दइ ध्वजने संतोष्यो रे, वस्त्र
विशेषे षटरसें पोष्यो रे ॥ आशीस देइ ध्वज
घरें चाल्यो रे, पूरण धन लेइ दालिद्र वाल्यो
रे ॥ सु० ॥ २६ ॥ हवे सुक पंखी सरस क
हेसी रे, राणीसुं उपगार करेसी रे ॥ जिम जि
म देखे नारी सुतारा रे, तिम तिम पंखी दुःख अ
पारा रे ॥ सु० ॥ २७ ॥ नयणे निझरणे सुक
रोइ रे, कोइ न जाणे कारण सोइ रे ॥ त्रीजी ढाल
संपूर्ण कीधी रे,कनक सुंदर कीर्त्ति प्रसिद्धीरे॥ २८॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे सुक पंखी वीनवे, सुण कासीधर राय ॥
ए नारि ब्राह्मण नथी, सुख दीठां दुःख जाय ॥
॥ १ ॥ ए सेवक चंडालनुं, श्रीहरिचंद नरिंद ॥
हुं मंत्रि राजातणो, कर्मेथयो ए फंद ॥ २ ॥ सति
सुतारा लोचनी, ए हरिचंदनी नार ॥ कर्म वसे
परवस पड्या, पाया दुःख अपार ॥ २ ॥ सत्य
राखण ए नृपति, निश्चल राखण टेक ॥ वेंचा
णो चंडालने, वेंची नारि प्रत्येक ॥ ३ ॥ एहिज
तापस पापीया, लागा एहनी लार ॥ राज्य ल
इने दंड कियो, ए शिर लाख दीनार ॥ ४ ॥ तो
पण राजा साहसी, सत्य राखण सुविशेष ॥ लइ
नारि रोहिताससुं, परवरिया परदेश ॥ ५ ॥ श्लोक॥
राज्यंयातु स्त्रीयां यातु, यातु प्राण अपिक्षणात् ॥
एक एव मया प्रोक्ता, वाचा मयातु शाश्वती ॥
॥६॥ दोहा ॥ सत्य राखे थिर संपदा, सत्य गयां
पत जाय ॥ सत्यकी दासी संपदा, बहुरी मिलेगी
आय ॥ ७ ॥ साहसीयां लछी मिले, नहु का

यर पुरिसेह ॥ काने कुंमल रयण मय, नयणे काजल रेह ॥ ८ ॥ सूराने सत्य वादीयां, धीरा एक मनाह ॥ दैवकरे तस चिंतडी, वंछित फलसे त्यांह ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग केदारो ॥ हंजा मारूना गीतनी ॥ देशी ॥

॥ वेची तारालोचनी, राजा वेच्यो राज कुमार ॥ वेच्या मंदिर मालिया, राजा राज्य रूद्धि नंमार ॥ धन सत्य धारीरे, नृपति शील समो नहीं कोय ॥ १ ॥ धन० ॥ ए आंकणी ॥ सत्य अखंमित नृपति, राजा इण विध रहे उदास ॥ हुं मंत्रि हरिचंदनो, राजा सुण नृपति सुविलास ॥ धन० ॥ ॥ २ ॥ इणे मुज तापस पापीए, राजा कीधो पहेलो कीर ॥ तिण कारण तुमने कह्यो, राजा ए दृष्टांत गुण हीर ॥ धन० ॥ ३ ॥ कर्म रूलावे जीवने, राजा आपे दुःख अनंत ॥ पूर्व नवनां जे कीया, राजा दुष्कृत कर्म दूरंत ॥ धन० ॥ ४ ॥ तापस पण नासी गया, राजा सुणी सुक वचन सुरेख ॥

राजा मन अचरज थयो, राजा इस्यो अचंभो देख ॥ धन० ॥ ५ ॥ राय कहे दीसे नहीं, राजा मंत्रवादी ते कोइ ॥ सभा सकल संसय पडी, राजा हमणा हूंता सोइ ॥ धन० ॥ ६ वली सुक पंखी वीनवे, राजा जो ए सति संसार ॥ करडी धीजज हुं करुं, राजा जलती जलण मजार ॥ धन० ॥ ॥ ७ ॥ राजा मन कौतुक थयो, राजा जल ज लता अंगार ॥ अग्नी जगावी खेरनी, राजा ज्वाला नल भयंकार ॥ धन० ॥ ८ ॥ रवि सामो ऊनो रही, राजा पंखी बोले एम ॥ जो ए साकिणि छे इ हां, राजा तो हुं होजो भस्म ॥ धन० ॥ ए ॥ सती सुतारा लोचनी, राजा ए हरिचंदनी नार ॥ शील वंत गय गामिणी, राजा तो मुजने जयकार ॥ ॥ धन० ॥ १० ॥ त्यारें तारालोचनी, राजा सुक सुंदर बोली एम ॥ सुडा सुगुरु पंखीया, राजा तु जने होजो खेम ॥ धन० ॥ ११ ॥ अर्थ देइ चित्र भानुने, राजा ध्यान धरि नवकार ॥ अरिहंत देव आराधतो,सुडा जिनशासन जयकार॥धन०॥१२॥

रागकेदारामां कही,राजा चोथी ढाल रसाल ॥ कन कसुंदर मुनि वीनवे,राजा सुक ने मंगल माल ॥ १ ३

॥ दोहा ॥

॥ तत्क्षण पंखो श्याम धूम, भडधड पड्यो ध गन्न ॥ पंख समारी पंखीयो, उडी पड्यो अगन्न ॥१॥ जिण वेला सुक पंखीये, कीनी जंपा पात ॥ शीतल जल परें कमल दल, थइ असंभव वात॥

॥ ढाल ॥ पांचमी ॥ राग परजीयो, जूर्ड अगमगति पुण्यनीरे ॥ ए देशी ॥

॥ ए अधिकाइ देखी तिहां रे, हरख्यो नृप तत्काल रे ॥ हरिचंदने तेडी कहे रे, तुं महोटो नूपाल रे ॥ १ ॥ कर्म कमाइ हरिचंद नोगवेरे, सुख डुःख सरज्यां होय रे ॥ कर्म० ॥ ए आंकणी ॥ राय पसाय करे तिहां रे, दीउं तुज आधो राज रे ॥ वलतो हरिचंद वीनवे रे, रा जथी नथी कोइ काज रे ॥ कर्म० ॥ २ ॥ राजा कहे मोहोटो करुं रे, द्युं तुज माहारो देश रे॥

हुं तुज आलंबन ग्रही रे, करशुं नगर नरेस रे ॥
॥ कर्म० ॥३॥ न्हाना महोटा कुण करे रे, कर्म
तणे वस होय रे ॥ हुं सेवक चंमालनो रे, हरि
चंद हुं नही कोय रे ॥ कर्म० ॥४॥ सती गइ घरे
विप्रने रे, मनधरि अधिक आनंद रे ॥ साथ गयो
चंमालने रे, श्रीहरिचंद नरिंद रे ॥ कर्म० ॥ ५ ॥
लंछन उतस्यो सती तणो रे, सत्य शीयल सुपसा
य रे ॥ श्रीनवकार सदा जपे रे, प्रणमु तेहना
पाय रे ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ सबल सुदृढ राजा साह
सी रे, मंदरगिरि जेम धीर रे ॥ अचल अलंग रा
जा ध्रु जिस्यो रे, सायर जेम गंनीर रे ॥ कर्म० ॥
॥ ७ ॥ राज गयो विरहो थयो रे, कोइ करे आ
प घात रे ॥ विष खाइने जलि मरे रे, कोइ करे
जंपापात रे ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ को थाए गहिलो बा
वलो रे, को थाये योगी अवधूत रे ॥ पण सत्य
राखण कारणे रे, अडिग रह्यो अद्भूत रे ॥कर्म०॥
॥ए॥ सेज सुखासण बेसतां रे,सोवन खाट पलंग
रे ॥ ते राजा नदीयां वसे रे, आज उघाडे अंग रे

॥कर्म०॥१०॥ पांचमी ढाल राग परजीयो रे, कन कसुंदर मुनि राय रे॥ जंपे यश करजोडीने रे, धन धन हरिचंद राय रे ॥ कर्म० ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस रजनी समे, नदी तीर हरिचंद॥ बेठो राखे साहसी, मृतक मसाण नरिंद ॥ १ ॥ नारि रोति विलविले, श्रवण सुण्यो वड वीर ॥ कुण रोवे किण कारणे, उठ्यो साहस धीर॥२॥ सती सुतारा लोचनी, पुत्र मरण विखवाद ॥ मृतक लेइ आवी तिहां, रोवे लांबे शाद ॥ ३ ॥ आधी रातें आरडे, अबला विषमें ठाम ॥ जीणे स्वर रोवे घणु, लइ लइ सुतनुं नाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ छठो ॥ राग मल्हार सांइ साचलो हो ॥ अथवा देखो गति दैवनी रे॥ ए देशी॥

॥ रयण उदाल्यो माहरो रे, दया नकीधीरे दैव ॥ अबला दुःख सबले पडी रे, उडी नजाये रे जीव ॥१॥ कुमर सुलक्षणा हो, मुख बोलो रोहीताश्व,विषमीवेला नंदनां रे,कीधी माता निरा

स ॥ कुम० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ रयण नगाजे रं
कने रे, वानरने गले हार ॥ पेहेली माथे बेडलो
रे, रहे केती एक वार ॥ कुम० ॥ ३ ॥ पंख वि
हुणी पंखणी रे, कां सरजी किरतार ॥ अधविच
राखी एकली रे, है है सरजणहार ॥ कुम० ॥४॥
काया गढ मुज विग्रह्यो रे, वाग्या विरह निशान ॥
घट चढियो मुज घरणणे रे, जडी नजाये रे प्राण
॥ कुम० ॥ ५ ॥ तुं मन रंजन नंदनां रे, तुं मुज
जीवन प्राण ॥ ऊंची चढी नीची पडी रे, सुंदर
पुत्र सुजाण ॥ कुम० ॥ ६ ॥ मुखलडे मन मोह
तो रे, हसतो करतो हेज ॥ सुंदर नूर किहां ग
युं रे, ताहारो सूरज जेवो तेज ॥ कुम० ॥ ७ ॥
आडो करीने आवतो रे,हुं लेती उछरंग ॥ मोदक
मीठा मागतो रे, रमतो जमतो रंग ॥ कुम० ॥
॥ ८ ॥ जगो पुत्र उतावला रे, परवरिया परदे
श ॥ विरह थयो जरतारनुं रे, पोहोतां दुःख अ
शेश ॥कुम०॥ए॥ तुं मुज हार हीया तणु रे, कि
रण तपे जिम सूर ॥ जगी मलो हंसी हेजशुं रे,

कीधो अधिक असूर ॥ कुम० ॥ १० ॥ हे हे वज्र माहारो हीयो रे, पछरथी परचंम ॥ धरणी सरणे सुत पोढतां रे, न हूवो खंमो रे खंम ॥ ॥कुम०॥११॥तुं मुज जीवन जीवनो रे, निराधारा आधार ॥ अंधानी जेम लाकडी रे, तुं कुल थंन कुमार ॥ कुम० ॥ १२ नयण कमलदल न्हा नडा रे,कोम रह्या तुज केड ॥ आंख तणी बिंदी जिसो रे, वसति उजड वेड ॥ कुम० ॥ १३ ॥ हुं दुर्नागिणी जाउं किहां रे, दुःख नरपूर प्र काश ॥ चंद सूर्य त्रुटी पड्या रे, ढटकी पड्योरे आकाश ॥कुम०॥ १४ ॥ त्रण्य नुवन नेला थया रे, धरणी हुइ निराधार ॥ तुं मुजने मूकी गयो रे, प्राणाधार कुमार ॥ कुम० ॥ १५ ॥ इणी परें बहु दुःखें जूरती रे, अबला हुइ रे अश्वास ॥ गाढे स्वरें रोई रही रे, नाखी रही रे निश्वास ॥ ॥ कुम० ॥ १६ ॥ दिवस निगम शुं किणीपरे रे, अबला हुइरे अचेत ॥ विरह लहरी वागी घणु रे, हे हे मोहनी हेत ॥ कुम० ॥ १७ ॥ सुणी राजा

पाछो वळ्यो रे, पटराणीनो साद ॥ रोहीताश्व मुऊ सही रे, राय करे विषवाद ॥ कुम० ॥ १८ ॥ है है कर्मगति माहरी रे, विपद विषाद विनाण ॥ दुःख माहें दुःख संपना रे, दैव करे ते प्रमाण ॥ ॥ कुम० ॥ १ए ॥ सुं रोवुं सुं आरडुं रे, किणसुं करुंरे पोकार ॥ कुण दुःख जाणे माहरो रे, जे रूठो किरतार ॥ कुम० ॥ २० ॥ ढाल छठी इणीपरे कही रे, विरही राग मल्लार ॥ कनकसुंदर कहे सांजलो रे, हवे आगें अधिकार ॥ कुम० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणी राजा पाछो चल्यो, तेणी वारे तत्काल ॥ बालक एक बांध्यो अछे, वट तरुवरनी माल ॥ ॥ १ ॥ दीठो महिपति विलवतो, मुख करतो पोकार ॥ रे रे मुजने मारसे, योगी रूठो अपार ॥ २ ॥ को जायो तिथि चांडणी, को नर छे निर बीक ॥ पर उपकारी को पुरुष, छोडावो साहसीक ॥ ३ ॥ गाहा ॥ मुक्तिस्त्रीविसिकरणं, करणं परोपकारश्च ॥ अणसणविधिनांमरणं, स्मरणंच जगवतां ॥

॥ढाल सातमी॥राग केदारो ॥ झुंबखडानी देशी॥

॥ झाडे बांध्यो विलविले रे, सुंदर बालक एक॥ मरुंरे मातजी ॥ सूरवीर कोइ साहसी रे, छे को इ सुविवेक ॥ मरुं० ॥ १ ॥ सात दिवस परण्या थयां रे, सुख दीठो नहीं कोइ ॥ मरुं० ॥ एकज पुत्र मावित्रनो रे, अवर न दूजो होइ ॥ मरुं० ॥ ॥ २ ॥ राजपाटनो हुं धणी रे, कासीधरनो पुत्त ॥मरुं०॥ सूतो आण्यो सेजथी रे, जूत नख्म अ वधूत ॥ मरुं० ॥ ३ ॥ तेल कढाइ उकले रे, हो म करसे ए मुज ॥ मरुं० ॥ मरण सही इहां आ वियो रे, किणसुं कीजें गुह्य ॥ मरुं० ॥ ४ ॥ रा जा हरिचंद चिंतवे रे, एह करुं उपगार ॥मरुं०॥ एह संकटथी छोडवुं रे, सुंदर राज कुमार॥मरुं०॥ ॥ ५ ॥ वृक्ष चढ्यो ते साहसी रे, बंधन छोड्या तास ॥ मरुं० ॥ आप बंधायो नृपती रे, तिणे थानक दृढ पास ॥ मरुं० ॥ ६ ॥ रंज्यो कुमर घ रें गयो रे, जाइ मल्यो मावित्र ॥ मरुं० ॥ सबल कष्टथी उगर्यो रे, वात कही सुविनित ॥ मरुं० ॥

॥ ७ ॥ कासी धर पूछे कहो रे, बेटा निज अधि कार ॥ मरुं० ॥ कोण उपकारी एहवो रे, जिणे कीधो उपकार ॥ मरुं० ॥ ८ ॥ धन्य जन्म जग तेहनो रे, धन पिता धन मात ॥ मरुं० ॥ पुरुष रतन जग जाणीयें रे, वसुधा मांहे विख्यात ॥ ॥ मरुं० ॥ ए ॥ जे सेवक चंपालनुं रे, हरियो नाम कहाय ॥ मरुं० ॥ तिणे मुजने तिहां थकी रे, छोड्यो कर्यो उपकार ॥मरुं०॥१०॥ सातमी ढाल सोहामणी रे, राग जलो केदार ॥ मरुं० ॥ कनक सुंदर कहे सांजलो रे, सरस कथा सुवि चार ॥ मरुं० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर आव्यो तिहां,जोगी ते अवधूत ॥ दीसे अतिही बिहामणो, जस्म जयंकर जूत ॥१॥

॥ ढाल आठमी राग गोडी ॥ बेकरजोडी तामरे, जडा वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ आव्यो ते यमदूत रे, जूत जयंकर, दीसे अ तिही बिहामणो ए ॥ मोहोटा दांत दूर्दंत रे,

काल कृतांतनां, रौद्र रूप रौद्रामणोए ॥ १ ॥ झक झक वाजे झाक रें, गाढो बर बरे, भूत नयं कर हूंक येए ॥ मण वारे तिहां तेलरे, होम क रण जणी, अग्नि कढाइये ऊकलेए ॥ २ ॥ जर मर जरमर जटराल, खेंचर भूचर, सोर करे अ ति बरबरे ए ॥ भूख्या पेट नाडंग रे, खाओ खा ओ करे, अंगारा नक्षण करे ए ॥ ३ ॥ धूंधूंकार अपार रे, धडहडता धसे, मुखमां ज्वाला नीसरे ए ॥ काला काल कराल रे, निझर निसाचरा, दंत घरटी ज्युं ते दले ए ॥ ४ ॥ धडधड धूजे अंग रे, गूझा लड थडे, नागा भूगा नड हडे ए ॥ विषम रूप विकराल रे, अग्नि ऊगालता, दह दिशि दोडे दडवडे ए ॥ ५ ॥ सड सड वाजे सोकरे, पेट आ मिष भरे, हलफल ऊंचा ऊछलेए ॥ लागा पेट पायाल रे, लोयण काबरा, छल करता कायर छले ए ॥ ६ ॥ आवे अति डुर्गंध रे, आरिष ए हवा, व्यंतर वेग वकारीया ए ॥ योगी आवे ते थरे, हरिचंद छे जिहां, बावन वीर हकारीया ए

॥ ७ ॥ तोड्या बंधन तासरे, ग्रोडयो तत्क्षणे, श्रीहरिचंद महीपति ए ॥ उतास्यो, नरनाथ रे, बोल्या बूमनो, मम शंके तुं शुनमति ए ॥ ७ ॥ अग्नि कडाइ मांहे रे, सुण हो मानवी, होम करीश हुं ताहरो ए ॥ तुंठे लक्षण बत्रीश रे, विश्वा वीशए, कारज सिद्धकर माहरोए ॥ ए ॥ तुं हवे ताहारे हाथरे, कापी कापी करी, तन काढी द्ये आपणो ए ॥ मकरीस विलंब लगार रे, वार लागे घणी, आरंन में मांम्यो घणुए ॥१०॥ बुगदो दीधो हाथ रे, श्रीहरिचंदने, काया काटे नूपतीए ॥ मनमां न आणे शंक रे, निकलंक सत्यवंतो, सबल साहस ठत्र पतीए ॥ ११ ॥ काटयो दाहिण हाथरे, वामा हाथशुं, मन प्रमोद अधिको धरी ए ॥ जंघ चरण पण दोय रे, काटया आपणा, द्ये तेहने तिलतिल करीए ॥१२॥ काटण लागो जामरे, मस्तक आपणो, श्याल एक आव्यो तिसेंए ॥ रोवे सरले सादरे, डुःख नर जंबूको, तापस पण प्रगटया इसेंए ॥ १३ ॥

धमधमता धखराल रे, तेहि जंबूमनो, अग्नि कडाह मांहे धसेए ॥ तिणे वेला तत्कालरे, बूमन बापडो, सोवन पुरिसो उपनोए ॥ १४ ॥ एए श्री हरि चंदरे, तापस इम कहे, धन्य धन्य सत्य राजा तणोए ॥ दीधो डुःख अनंतरे, ए चूके नही, शील सत्य साहस घणुए ॥ १५ ॥ संरोहणि तत्कालरे, आणी औषधी, सज्ज कस्यो लेपन करीए ॥ अंगोपांग सुचंगरे, नवपल्लव थया, सुर पोहो ता अमरा पुरीए ॥ १६ ॥ पुण्य तणे परिमा णरे, पुरिसो सोवन तणो, सिद्ध थयो हरिचंदनो ए ॥ सत्य दाख्यो हरिचंदरे, सुरपति आगलें, श्री हरिचंद नरिंदनोए ॥ १७ ॥ आठमी ढाल रसा लरे, कनकसुंदर कहे, सुणतां मन आणंद घणो ए ॥ सुणजो सकल सुजाणरे, हवे आगल वली, सरस संबंध सोहामणोए ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिचंद महिपति, पुरिसो राखी प्रस न्न ॥ बेगो जाइ मसाणमें, प्रह उगमतें प्रयत्न

॥ १ ॥ कालमंम आयो तिसे, क्रोधें कालचं माल ॥ वचन कहे हरिचंदने, वक्रति अति वि कराल ॥ २ ॥ रे हरिया अति वेगसुं, मृतक वस्त्र लइ आव ॥ महुर एक मसाणनी, तरतथी जइने लाव ॥ ३ ॥ चिंतातुर हरिचंद थयो, पुत्र चीरने काज ॥ निश्चें लीधा जोइयें, गयो तिहां नर राज॥ ॥ ४ ॥ कुमर मुउ केम कामिनी, कहो ते सकल विचार ॥ वाडीमां रमवा गयो, सर्प मस्यो निरधा र ॥ ५ ॥ हाहा हरिचंद चिंतवे, विषम कर्म गति एह ॥ दुःख कोण जाणे जे थयो, क हेवा लागो तेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी राग सारंग मल्हार ॥ नाहली ये म जाए गोरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ राजा हरिचंद वीनवे, राणी वस्त्र कुंमरना आपो ॥ गरज अमारे एहनी, राणी बीजीरे वात म थापो ॥ १ ॥ कामिनी द्यो रे कपडा कुमरनां ॥ अवसर एहवो रे आज ॥ आजनो दाहाडो रे सुं दर एहवो ॥ कहेतां आवे छे लाज ॥ का० ॥ २॥

पहेली वेचीरे तुजने वालही, राणी पछी रे वेचा
णु हूं ॥ वेहु बराबर ऊतख्या, राणी रोष करे जे
णे तूं ॥ का० ॥ ३ ॥ राणी दुःख मांहे दुःख
संपना, राणी मुजने तुजविण जेह ॥ ते मन जाणे
माहरो, राणी कहे परमेसर तेह ॥ का० ॥ ४ ॥
नयन कमल दल सुंदरी, राणी आज निःफल
सवि आस ॥ न्हानडीये मरते वली, राणी आ
शा हुइ रे निरास ॥ का० ॥ ५ ॥ सुं कीजें हो
साहेबा, कंता कर्म तणी गति क्रूर ॥ मुख कहे
तां आवे नहीं, कंता दुःख दीठा नरपूर ॥ का० ॥
६ ॥ तरता थाग न पामीयें, कंता दुःख सागर
नो पार ॥ ज्युं परमेसर निबंधीयुं, कंता न मटे
तेह लिगार ॥ का० ॥ ७ ॥ नारी रमी तुं नामिनी,
राणी तुजमां राग न रोष ॥ महीयल तुं मोटी
सती, राणी सगलो माहरो दोष ॥ का० ॥ ८ ॥
ढाल कही नवमी, नली राणी हर्ष घणो मन आ
ण ॥ कनक सुंदर हवे बोलसे, राणी देव आका
शें वाण ॥ का० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीहरिचंद महिपति, साहस वंत अनंत ॥
कपडा माग्या कुमरनां, बोली वाणी निरंत ॥१॥
सुरवाणी बोल्यो इसी, धनधन हरिचंद राय ॥
तुज सम त्रिभुवन को नही, नर किंनर सुर राय
॥ २ ॥ कुसुम वृष्टी हुइ तिहां, वागा जय निशा
न ॥ देव कहे जय जय शब्द, पाम्या परम नि
धान ॥ ३ ॥ सुर निज माया फेरवी, सन्ना मांहे
सिरताज ॥ इणी विधें बेगो तखत, नयरी अयो
ध्या राज ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ दशमी ॥ राग खंनायती ॥ तारे कोडेरे
वैदरनी परणे कुमररे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे हरिचंद महीपती रे, नगर अयोध्या
राजो रे ॥ राणो राण दीवानमें रे,आप बिराजे आ
जो रे ॥१॥ राजन्नोगवे हरिचंद, इणीपरें आपणो
रे॥नगरी कौशल्या आनंद, उछाह हूउ घणो रे ॥
॥ राज० ॥ ए आंकणी ॥ चारे दिशें चामर ढले
रे, राजा प्रजा मन मोहे रे, ॥ रा० ॥ २ ॥ केइक

लेइ आवे भेटणा रे. माता मयगल घोडा रे ॥
सत्तावीश अंतेउरी रे, पुत्र कलत्र सजोडा रे ॥
॥ रा० ३ ॥ रोहिताश्व मनरंगसुं रे. रमतो रमतो
आयो रे ॥ मंदिर मांहें सुंदरी रे, पटराणी सुख
पायो रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ पयलागे व्यवहारिया रे,
मोती माणक ल्यावेरे ॥ याचक जय जय उच्चरे रे,
लला राज डुवारें रे ॥रा०॥५॥ नगर सहु सण
गारीयो रें. सोहव नारी आवे रे ॥ राय वधावे आ
पणु रे. धवल मंगल गीत गावे रे ॥ रा० ॥
॥ ६ ॥ बंदीवान छोडावीया रे, जयजय शब्द जणा
वे रे ॥ देशविदेशें आपणी रे. आण तुरत वर्त्तावे
रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ जगमांहें जस वापरे रे. दूर अ
वनित निवारे रे ॥ जीव अमारि देशमां रे, धर्म
तणी गति धारे रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ हरिचंद एहवो
नीपनो रे, दोलतनो दरबार रे ॥ दान देछे ब्राह्मण
भणी रे, जपे जग जयकारो रे ॥ रा० ॥ ए ॥ म
तिसागर सुक जे हतो रे. कुंतल सेवक शीयालो
रे ॥ देवे मानव ते कीया रे, आवी मह्या भपालो

रे ॥ रा० ॥ १० ॥ राजा हरिचंद चिंतवे रे, सुप नांतरमें दीठो रे ॥ जीव पड्यो जंजालमें रे, नृप मन भर्म पइठो रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ ज्ञानी विण जाणे नही रे, कर्मतणी गति कोइ रे ॥ पटराणी पासें गयो रे, हरिचंद हरखित होइ रे ॥ रा० ॥ ॥ १२ ॥ आगल आवी ऊभी रही रे, बोले अमृत वाण रे ॥ हरिणाक्षी हसीने भने रे, आवो जीवन प्राण रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ राय कहे सुण सुंदरी रे, चित्त भ्रमियो मुज आज रे ॥ कहोनी ए वातडी किम थइ रे, कहेता आवे लाज रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ थें कांइ जाणो को नही रे, सांभलजो अधिकार रे ॥ दाखे तारा लोचनी रे, भ्रम पड्यो भरतार रे ॥ रा० ॥ १५ ॥ चलचित्त राजा साहसी रे, कनकसुंदर सुख लहेसी रे ॥ दशमी ढाल रखं भायती रे, सुर सगलो ही कहेसी रे ॥ रा० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देव एक आव्यो तिसे, जलकत कुंभलाभ रण ॥ तेजें सूरज सारिखो, काया कंचन वरण ॥

॥ १ ॥ आवीने उनो रह्यो, रत्न मुकुट उर हार ॥ काने कुंमल जलहले, सूर ज्युं ज्योति अपार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ अगीआरमी राग मल्हार ॥ जीहो कुंवर बेगो गोखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो इण अवसर तिहां आवीयो, लाला जलकत कुंमल कान ॥ जीहो मस्तके मुकुट सोहामणो, लाला सुंदर तन सुज्ञान॥ १ ॥ महीपति खमजो अम अपराध ॥ जीहो दुःख विविध परें में दीयो, लाला अधिक करी आबाध ॥मही०॥ २॥ जीहो इंद्र सनामां एक दिने, लाला बेगो उलट आण ॥ जीहो सत्य वखाण्यो ताहरो, लाला में नवी मान्यो जाण ॥ मही० ॥ ३ ॥ जीहो ठलबल करी बहु वेदना, लाला में कीधी सवि एह ॥ जीहो दाय उपाय कीया घणा, लाला तुं नवी चूको तेह ॥ मही० ॥ ४ ॥ जीहो ठेदन नेदन ताडना, लाला पामी तें नर पूर ॥ जीहो कसणी कसी में आकरी, लाला सेना जेम सनूर ॥ मही० ॥ ५ ॥ जीहो प्रतपें तुं

दिन दीपतो, लाला अविचल पाले राज ॥ जीहो सुणी हरिचंद मन रंजीयो, लाला देव तणा ए काज ॥ मही० ॥ ६ ॥ जीहो देव गयो देवलोक में,लाला दाखी सघली वात॥जीहो इंद्रे वखाण्यो तेहवो, लाला दीठो धरणी नाथ ॥ मही०॥७॥ जीहो इग्यारमी ढाल कही नली, लाला कनकसुंदर मुनिराय ॥ जीहो सांनलतां सुख ऊपजे, लाला आनंद अंग न माय ॥ मही०॥८॥ जीहो नावडगछे राजीयो, लाला श्रीमणिरत्न मुणिंद ॥ जीहो अनंतकला उवक्षायजी, लाला निजगछ मांहेचंद ॥मही०॥९॥ जीहो तसपद कमल प्रसादथी, लाला अविचल बुद्धि अपार ॥ जीहो कनकसुंदर मुनि वीनवे, लाला चतुर्विध संघ जयकार ॥ मही० ॥ १० ॥ जीहो चोथो खंम सोहामणु, लाला नवरस सरस विचार ॥ जीहो बिजत्स जय करुणा मयी, लाला रौद्रने शांत प्रचार ॥ ॥ मही० ॥ ११ ॥इति चतुर्थ खंम समाप्तः ॥

॥ अथ पंचम खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे बोलुं खंड पांचमुं, पंच परमेष्टी पाय ॥ करजोडी प्रणीपत करुं, पूरण करो पसाय ॥१॥ बहुदिन बहु सुख भोगवी, राजा श्रीहरिचंद ॥ चारित्र लेवा चिंतवे, जो आवे जिणचंद ॥ २ ॥ मनमांहे इछा करे, सुतने सोंपुं राज ॥ जो इहां आवे शांतिजिन, सारुं आतम काज ॥ ॥ ३ ॥ छेह नहीं सुख दुःखनुं, धर्मविण गति न कांय ॥ मुक्तिपंथ लहीये नही, विण भेटया जिनराय ॥४॥ भाव रुषीश्वर नृपति, थयो हवे हरिचंद ॥ चारित्र लेवा चिंतवे, जो आवे जिणचंद ॥५॥ मेह वाट मन मोरज्युं,शांतिनाथ जिनराज ॥ जोतां आवी समोसर्या, वन उद्याने आज ॥६॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग बंगाल, शांतिजिणंद जुहारीयें सुरती महीनाना देशी ॥

॥ इणे अवसर तिहां आव्या, जिनवर जग

दानंद ॥ साध घणासुं परवस्या, जगपति शांति जिणंद ॥ देव डुंडुही वाजित्र, वाजे जल्लर नेरी ॥ ताल कंशाल अने श्री, मादल नाद नफेरी ॥ ॥ १ ॥ मल्होटा मल्होत्सवें राजा, लोकसुं हर्ष ध रेवि ॥ आयुध छत्र मुकुट, सवलाही दूर करे वि ॥ तीन प्रदक्षणा देइ, वांद्या श्रीनगवंत ॥ राय राणी मंत्रीसर, ते बेठा एकंत ॥ २ ॥ यो जन वाणी वखाणे, जाणे अमृत धार ॥ धर्म कथा सांनलवा, बेठी परखदा बार ॥ निज निज नाषायें दाखवे, सहुने श्रीवीतराग ॥ केइ श्रावक व्रत आदरे, केइ चारित्र वैराग ॥ ३ ॥ जलधर बुंद तणी परें, चातुक चित्त हरिचंद ॥ सरस व चन रस पावन, करत तृपति नरिंद ॥ राजा श्री हरिचंदजी, कहे करकमलने जोडि ॥ नवनय नंजण जिनवर, नव संकटथी छोड ॥ ४ ॥ कहो नगवन् पूरव नवें, पाप कीया कोण कोडी, बहु विध आपदा नोगवी, लागी सबली खोडि ॥ कहे श्री शांति जिनेसर, नरवर सुण अधिकार ॥ पूर्व न

वजे कर्म, कीया तस एह विचार ॥ ५ ॥ कर्म प्र
माणे जोगवे, प्राणी दुःख अपार ॥ पूर्वदिशें अम
रावती, नयरी जोयण बार ॥ अमरसेन राजा ति
हां, पाले वरण अढार ॥ पटराणी अमरावती, मं
त्रीसर मतीसार ॥ ६ ॥ अतुलीबल अलवेसर, रा
जेसर अवनीश ॥ तेज प्रतापें दिनपति, नरपति
विश्वावीश ॥ एक दिवश तिहां आव्या, दोय जती
गुणवंत ॥ चारित्रीया वैरागी, महोटा साधु महं
त ॥ ७ ॥ ठ मासी तप पारणे, मुनिवर आव्या
तेह ॥ एणे अवसर तिहां जरमर, जरमर वरसे
मेह ॥ नृप अंतेउर मंदिर, गोखतलें पहोचेय ॥
इरियावहि पडिक्कमवा, उना मुनिवर बेय ॥ ८ ॥
सुरनर किंनर दिणयर, अथवा पुरिसीह एम ॥
रूषी दीठा राजानी, राणी मोही तेम ॥ सुंदर मं
दिर रूप, पुरंदर सरिखे प्रेम ॥ जोग जोगवुं रूषी
साथें, राणी चिंते एम ॥ ए ॥ दासी साथें ठत्रह,
देइ बोलाया साध ॥ राज जुवने बे आव्या, मुनि
वर अकल अगाध ॥ आगल आवी उनी, राणी

बे कर जोड ॥ हाव नाव करी बोली, मुनि पुरो मुज कोड ॥ १० ॥ जन्म सफल कर सरिसा, स रस मल्यो संयोग ॥ वर्ष एक तुम ठाना, राखुं विलसो नोग ॥ तुमे तरुण वय यौवन, हुं पण बालक वेस ॥ बीजो को नही जाणसे, राजा न गर नरेश ॥ ११ ॥ प्रथम ढाल पूरी करी, साधु पड्यो जंजाल ॥ इम सुणी मुनिवर पाठा, बाहु लीया तत्काल ॥ राणी आगल दोडी, दीधा म हेल कमाड, कनकसुंदर कहे इणी परें, प्रीत न थाये माड ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राणी बोले रूपी सुणो, मकरो हठ अ नंत ॥ वर्ष नहीतो एक पण, विलसो नोग महंत॥

॥ ढाल बजी ॥ राग कालहरो ॥ रामगिरि ॥

रूडा रामजी नगर सूनो इण मेलीरे ॥ एदेशी ॥

॥ साधु कहे सुण माता गंगा, तुं ठे मात स मान रे ॥ ताहरे पुत्र थकी अमे अधिका, हठ किश्यो असमान रे ॥१॥ मोरी माताजी जावाद्यो

बे साध रे, अमे कवण कीयो अपराध रे ॥मो०॥
अमने थायेछे अधिकी बाध रे ॥ मोरी० ॥ २ ॥
॥ ए आंकणी ॥ वैरागी अमे बाल ब्रह्मचारी,
छांड्यो कुटुंब परिवार रे ॥ रमणी छांडी अमे रंला
सरखी, एह अमारो आचार रे ॥ मो० ॥ ३ ॥
रन्न वने रहियें इंडीय दहियें, सहियें आतप सी
त रे ॥ प्रीत न करियें नव तट लहियें, वहियें
चारित्र चित्त रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ काम न जागे,
पाप न लागे, व्रत न नांगे हीर रे ॥ जे तुं मागे
नही अम आगें, वैरागें मन धीर रे ॥ मो० ॥
॥ ५ ॥ इंडी बाली नस्म करी नाखी, सुं दीगे
कहे मात रे ॥ अमशुं आग्रह करीने एवडो,
कांइ विणासे वात रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ अमने दे
खीने तुं मोही, कारण केउ दाख रे ॥ शील र
यण अम पास अनोपम, ते जोइयें तो राखरे ॥
॥ मो० ॥ ७ ॥ साधु घणु राणीने समजावे, पण
नवि माने तेह रे ॥ नीजे पण पाहाण नवी ने
दे, नावें वरसो बारे मेह रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ चो

पडे घडे जिम छांट न लागे, तेन्हे रंग मजीठ रे॥ तिम मुनिने वचने नृप पत्नी, प्रतिबुजे नही धीठ रे ॥ मो० ॥ ए ॥ ढाल रसाल कही ए बीजी, कनक सुंदर मुनिराय रे ॥ हावभाव राणी बहु मांझे, मुनिवर मन न सुहाय रे ॥ मो० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ बोली राणी पापणी, वचन सुणो रूपी राज ॥ एकंते तुमने लह्या, सही न छोडुं आज ॥ ॥ १ ॥ रूपी जंपे माता सुणो, चले मेरुगिरि राय॥ शील अमारुं नविचले, वातां घणी बनाय ॥ २ ॥ काम लुब्ध कामनी कहे, राती विषया रस्स ॥ तुमने हुं विण भोगव्यां, छोडु नहीं अवस्स ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ त्रीजी राग सारंग मल्हार ॥

॥ मालाकिहांछे रे ॥ ए देशी ॥

॥ हुं नही छोडुंगी रे ॥ ए आंकणी ॥ नैन न चावत भ्रत नमावत, बाह लुवावत रे ॥ राग आलापत यंत्र मचावत, शीस घूमावत रे ॥ हुं० ॥ ॥ १ ॥ आलस मोडत करके काढाडत, उर उ

घाडत रे ॥ अधर दशन फुनी आप आपने, काम जगाडत रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ नृत्य करत फुनी पाय परत है, साकामातुरी रे ॥ कटी तटी देखत कुच पर करधरी, ऐसी आतुरी रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ भर नय दिखावे नैन नचावे, तुमकुं मारुंगी रे ॥ मानोगे जो वचन हमारे, प्रेम वधारुंगी रे ॥ ॥ हुं० ॥ ४ ॥ नीर चीर अंजन मर्दन घुसक, रुषीकुं नांखत रे ॥ विषय महारस सुदरी लीला, क्युं मन राखत रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ साधु महामुनि संवर कीनो, मौन महाव्रत रे ॥ हावभाव करत बहु त्रीया, कुछ नही भावत रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ मुनि मन मदन पकरी विप जलते, भेदत नाहीन रे ॥ बारह मेघ त्रीया जर लागी, न भेद तुं पाह न रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ धन धन ब्रह्मचारी वैरागी, टुक नही भीजत रे ॥ हावभाव नही बाण काम के, तन नही छीजत रे ॥ हुं० ॥ ८ ॥ त्रीजी ढाल कही संपूर्ण, कनक सुंदर मुनिराय रे ॥ में तिनकुं प्रणाम करत हुं, जे साधु न चलाय रे ॥ हुं० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निष्फल नृपपत्नी तणा, थया मनोरथ एह ॥ कर वालागी कुकूर्ड, डुराचारणी तेह ॥ १ ॥ मंदिर बार ज्घाडीया, आव्या नृप जन मांही ॥ जाल्या ते बेहु जती, बांध्या काली साही ॥ २ ॥ मुनिवर मुख बोल्या नही, मोहकर्म बल मार ॥ राजा आव्यो एटले, रमी वन गहन उदार ॥ ३ ॥ वात जणावी रायने, तेडाव्या बे साध ॥ निराप राध निठुर पणे, दीधी मार अगाध ॥ ४ ॥ बंदी खाने लइ धस्या, मास एक मुनिराय ॥ एक दिवस रजनी समे, मुनि पत्नणे सशाय ॥ ५ ॥ राजा राणी सांजले, सूता मंदिर मांहि ॥ कान देइ एक चित्तसुं, सुणे घणे उन्नाहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग गोडी ॥ वीरमति कहे चंदने ॥ ए देशी ॥

॥ साधु कहे निज जीवने, सांजल मन वीर ॥ जोगव पूर्व जवें कीया, ए डुःख जंजीर ॥ १ ॥ कर्म कमाइ आपणी, बूटे नही कोय ॥ सुरनर

कर्मैं विटंबीया, चित्त विचारि जोय ॥कर्म०॥२॥ रे मन कर्म विटंबना, मत आणो रोष ॥ कर्म क माइ प्रमाण ते, केह्नो नही दोष ॥ कर्म० ॥ ॥ ३ ॥ परडुःख देतां सोहेलो, सविहुनी रीत ॥ आपने सहेता दोहिलो, नवी सूधी नीत ॥ कर्म० ॥ ॥ ४ ॥ परने पीडा जे करे, नवी पूछे न्याव ॥ संकट पामे साधु ज्युं, अन्याय प्रजाव ॥कर्म०॥ ॥ ५ ॥ इमसुणी राजा उठीयो, आव्यो तत्का ल ॥ छोडाव्या बेहु जती, चमक्यो जूपाल ॥ ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ पयलागी प्रणीपत करे, हुं पा पी दुष्ट ॥ क्रपी मुज मिछामी डुक्कडं, थाउ संतु ष्ट ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ राणी पण संकी घणु, मन चिंते एम ॥ ए मोहोटा अपराधथी, हूं छूटीस केम ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ समकित व्रत बेहु आदरे, जागो मिथ्यात्व ॥ पाप आलोचे आपणा, त्रिहुं विध विख्यात ॥ कर्म० ॥ ए ॥ ते राणी तारा लोचनी, तुं ते हरिचंद ॥ साधु संताप्या तें जी के, पाया डुःख फंद ॥ कर्म० ॥ १० ॥ साधु मरी

सुर उपना, तापस सुर कोय ॥ तुज दुःख दीधो जेटलो, कर्मनी ए गति जोय ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ हरिचंद सुणी एम चिंतवे, साची जिन वाण ॥ संशय नांजे जीवना, सुखनी ए खाण ॥ कर्म० ॥ ॥ १२ ॥ वाणी सुणी नगवंतनी, हैए हर्ष न माय ॥ जाती स्मरणथी लह्युं, पूरव नव राय ॥ ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ कहे हवे चारित्र आदरुं, हरिचंद नूपाल ॥ कनकसुंदर मुनि वीनवे, चोथी ढाल रसाल ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ हवे हरिचंद आवो घरे, रोहीताश्वने राज ॥ देईने उछक थयो, चारित्र लेवा काज ॥ कर्म० ॥ १५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ रसीयाना गीतनी ॥ श्री उवझाय बहु श्रुत नमो नावशुं ॥ ए देशी ॥

॥ हरिचंद आव्योरे मंदिर आपणे, कुमरने सुंप्यो रे राज ॥ मुनिसर ॥ दान देइने तव चारित्र लीयो, धन दिन माहारो रे आज ॥ मुनि० ॥ १ ॥ वडो रे वैरागी हरिचंद वंदीयें, धन धन करणीरे तास ॥ मुनि० ॥ सत्यवंत संयमधारी निर्मलो,

चारित्र पवित्र प्रकाश ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ २ ॥
पंच महाव्रत सूधा आदरे, थयो साधु निर्ग्रंथ
॥ मुनि० ॥ बावीश परीसह डुक्कर ते सहे,
पाले मुक्तिनो पंथ ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ ३ ॥
प्रतिबोधी राणी तारा लोचनी, चारित्र पीयुने
रे साथ ॥ मुनि०॥ दीधी प्रभु अमृत रस देसना,
केवल आप्योरे हाथ ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ ४ ॥
चारित्र पाले चतुर महासती, शीयल संयम स
तसंग ॥ मुनि० ॥ पंच महाव्रत पाले परवडा,
मुक्ति सधे मनरंग ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ ५ ॥ ह
रिचंद उग्रविहार क्रीया करे, डुक्कर तपने रे ना
थ ॥ मुनि० ॥ काउसग्ग साधे मुनि खट मास
ना, उपसर्ग करीन सहाय ॥ मुनि०॥ वडो० ॥
॥ ६ ॥ छमासी पण तारालोचनी, डुक्कर तपह
तपंती ॥ मुनि० ॥ आगे सहती उपसर्ग आरि
या, आठेही कर्म खपंती ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥
॥ ७ ॥ मुनिवर मास छठे हवे पारणे, आवे अ
योध्या एकवार ॥ मुनि० ॥ दोष बेतालीश मुनि

वर टाळता, वोहोरता नीरस आहार ॥ मुनि० ॥
॥ वडो०॥ ८ ॥ छमासीनो साधी पारणो, दोष र
हित विहरंति ॥ मुनि० ॥ सरस नीरस गोचरी
लेती थकी, वळी छमासीनी खंत ॥ मुनि० ॥
॥ वडो० ॥ ९ ॥ हरिचंद शत्रुंजय जइ संचस्या,
काउसग्ग रह्या ऋषीराय ॥ मुनि० ॥ तिहां पण
काउसग्ग साधवी आदरे, आठेही कर्म खपाय ॥
॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ १० ॥ वळी ते साधवी
तारालोचनी, चित्तमें चिंते एम ॥ मुनि० ॥ साधु
संताप्या तिण पातक थकी, छूटको थाशे रे के
म ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ ११ ॥ राजा पण एहिज
चिंताकरे, समवाय केवळनाण ॥ मुनि० ॥ त्रिभु
वन बिहुंनो तेज प्रकाशीयो, ए ए पुण्य प्रमाण ॥
॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ १२ ॥ बहु दिन प्रतिबोधी
भवि जीवने, मुक्तियें पोहोता रे दोय ॥ मुनि० ॥
कनक सुंदर गुण गातां तेहनां, सवि सुखलीला
रे होय ॥ मुनि० ॥ वडो० ॥ १३ ॥ पंचवरण कु
सुमनी वृष्टी थइ, जय जय विविध प्रकार ॥

। वाजीरे गगने दुंदुही, गाजंतो
॥ वडो० ॥ १४ ॥
राग केदारो गोडी ॥ सेर सोना
डीदे चतुर सुजाण ॥ ए देशी ॥
ी चोपइ, अती नीकी नवरंगी ॥
ाइ ॥ सुगुण होवे ते सांभले, उलट
ग्रंग ॥ चंगी० ॥ १ ॥ सरस विसाणो
ो, पामीजे विण दाम ॥ चं० ॥ मोहन
वली ोपइ, नाम तिस्यो परिणाम ॥ चं० ॥
॥ २ । खाण रतन हीरा तणी, प्रगटी पुण्य प्र
माण ॥ चं० ॥ आदर करजो एहने, मुगति त
णा फल जाण ॥ चं० ॥ ३ ॥ राग छत्रीशे जू
जुआ, नवि नवि ढाल रसाल ॥ चं० ॥ कंठ वि
ना शोभे नही, ज्युं नाटक विण ताल ॥ चं० ॥
॥ ४ ॥ ढाल चतुर म चूकजो, केहेजो सघ
ला ाव ॥ चं० ॥ राग सहित आलापजो, प्र
बंध पुण्य प्रभाव ॥ चं० ॥ ५ ॥ मरुधरदेश मही
पति, जशवंत सबलो हांक ॥ चं० ॥ सोफत

हेर शोहामणो, नवकोटीनो ना॰
नावडगछ गुरु साधुजी, साधु
॥ चं० ॥ शिष्य पटोधर तेहना
चार ॥ चं० ॥ ७ ॥ उपाध्याय
गोतम अवतार ॥ चं० ॥ मुनिवर
जने, आगम ज्ञान अपार ॥ चं० ॥ ०
सुंदर शिष्य तेहने, गायो एह प्रबंध ॥
श्री हरिचंद नरिंदनो, शांतिनाथ संबंध ॥
॥ ए ॥ नवरस नेद जूजूआ, ढाल एगुण ॥ ॥
श ॥ चं० ॥ नावनेद बहु नांतना, विधि वि
श्वावीश ॥ चं० ॥ १० ॥ संवत् शोल सत्ताणवे,
सुद पक्ष श्रावण मास ॥ चं० ॥ पंचमी तिथी
पूरो हूउ, श्री हरिचंदनो रास ॥ चं० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गाथा साढी सातसें, तिण उपर इगतीस ॥
सांजलतां श्री संघने, पूगे आश जगीश ॥ १ ॥

इति श्री हरिचंद ताराल्लोचनी चरित्र शील
त्वाधिकारे पंचम खंम संपूर्ण ॥ इति समाप्त ॥